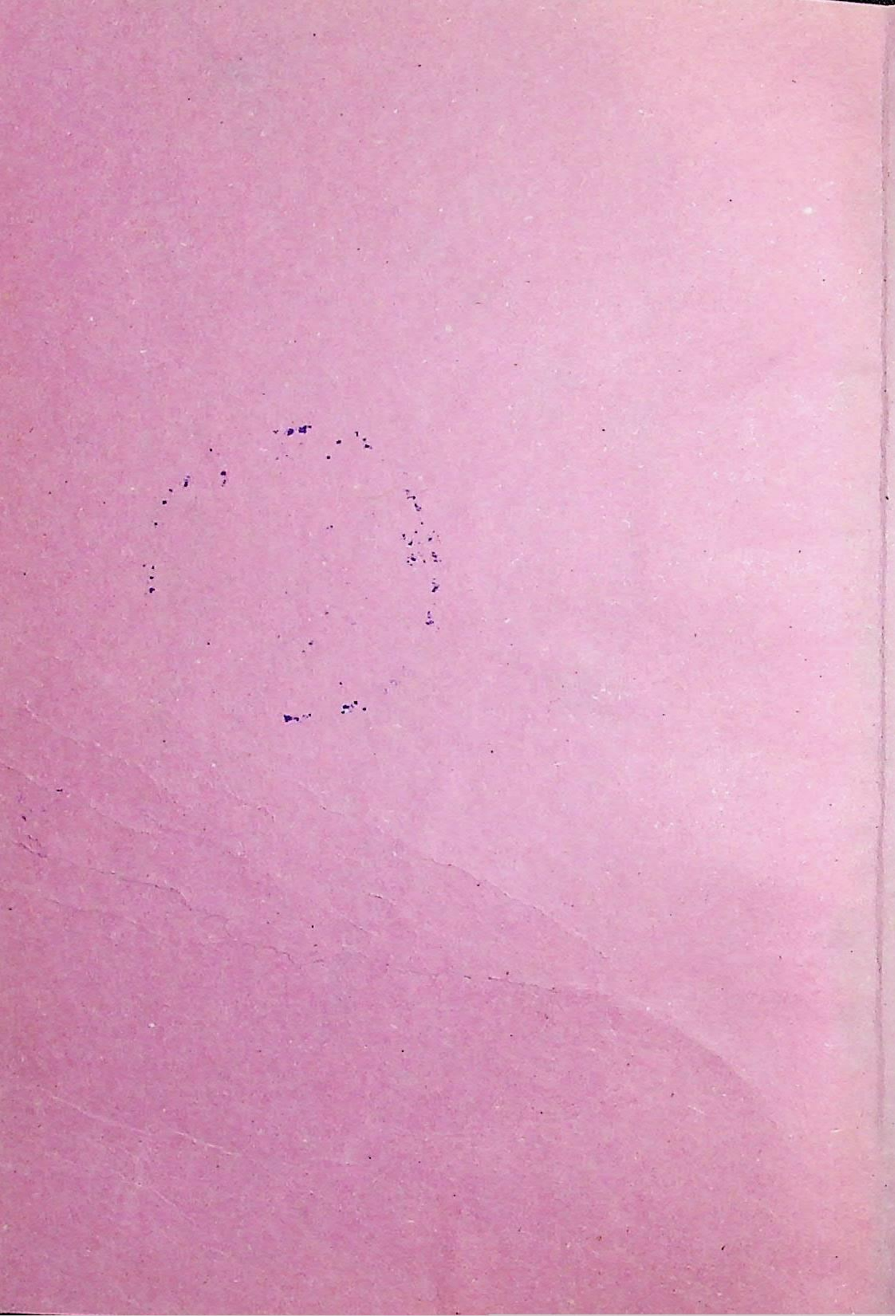
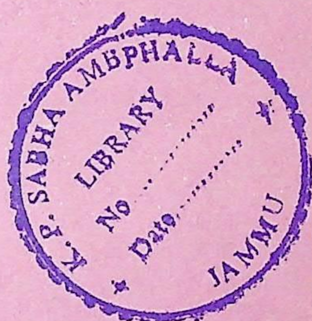
पालने का पूत



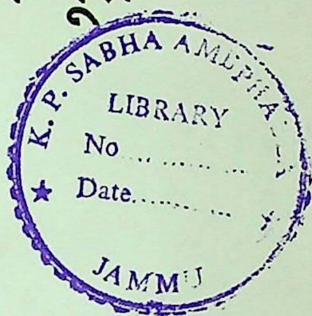
मोती लाल क्यमू




K.P. SABHA AMBPHALLA
LIBRARY
No.
Date.
JAMMU



पालने का पूत


K. P. SABHA AMIRAKADAL
LIBRARY
No..........
Date..........
JAMMU

मोती लाल क्यमू

Donated by
Author

प्रसिद्ध कश्मीरी नाटक
'मंज़्ल्य निक्' का हिंदी अनुवाद

अनुवादक
गौरी शंकर रैणा

© मोती लाल क्यमू
5-अपना विहार—जम्मू—180010

प्रथम संस्करण 1991

हिन्दी अनुवाद के सर्वाधिकार मोती लाल क्यमू के पास सुरक्षित हैं। इस नाटक के मंचन के लिये उन की लिखित अनुमति लेना अनिवार्य है।

मूल्य : 30/-

प्राप्ति स्थान—5-अपना विहार, जम्मू—180010,
किताब घर, केनाल रोड, जम्मू 18001

दो शब्द

'पालने का पूत' मूलतः कश्मीरी में लिखा गया नाटक है। 1968 ई० में लिखित इस नाटक की कश्मीर घाटी में अनेक प्रस्तुतियां आज तक हो चुकी हैं। 1971 से 1981 ई० तक कई निर्देशकों द्वारा इसे खुले आंगन अथवा आधुनिक रंगमंच पर बार-बार खेला गया। 'भांड' नामक लोक-कलाकारों ने भी इसके द्वारा अपनी हंसोड़-कला का सुचारू प्रदर्शन किया। सर्वश्री रतनलाल शांत, मक्खनलाल सराफ, रवि क्यमू तथा अन्य निर्देशकों के अतिरिक्त स्वयं मुझे भी कई कार्यशालाओं में इसकी नाट्य प्रस्तुति करने का अवसर मिल चुका है। आज तक यह 300 से अधिक बार मंचित हो चुका है।

हिंदी रूपांतर का मंचन रवि क्यमू के निर्देशन में नई दिल्ली और दूसरे महानगरों में 'प्रयोग' नामक नाट्य संस्था के झंडे तले हो चुका है। 'नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा' की ओर से भी इसका सफल मंचन हुआ। कुछेक घटनाओं और संवादों को अवसरानुकूल परिवर्तित किया जाता रहा है। यह संभवतया इसकी राजनीतिक प्रासंगिकता के दृष्टिगत आवश्यक भी है।

एक निकम्मा, कामचोर और क़द का बौना चूहामार अवसरवाद का पहनावा पहने नेतागिरी की डगर पर चल पड़ता है और अंततः मंत्री बन जाता है। यही हमारे समय की विडंबना है, जिसे रंगमंच की भाषा और तेवर प्रदान किए गए हैं। कश्मीरी

भाषा में मुहावरा बन चुके 'पालने का पूत' का हिंदी रूपांतर जारी करते हुए मुझे आशा है मेरा यह विनम्र प्रयास राष्ट्रभाषा की मुख्यधारा में मेरी ओर से अंशदान के रूप में पहचाना जाएगा।

गौरी शंकर रैणा ने मेरी अन्य नाट्य कृतियां—'त्रिनाम' 'तोता' और 'आईना' भी हिंदी में अनुवादित की हैं। मैं उनका आभारी हूं। प्रस्तुत संकलन में 'त्रिनाम' भी शामिल किया गया है, यह नाटक भारतीय नाट्य संघ, इलाहाबाद के वार्षिक नाट्य महोत्सवों में भी प्रस्तुत हुए हैं।

मोती लाल क्यमू

पात्र



- जवान मसखरा
- बूढ़ा मसखरा
- झंडाबरदार
- राजा
- छोटा मंत्री
- बड़ा मंत्री
- बौना (पालने का पूत)
- सुद्धू बिलाव
- बुद्धू बिलाव
- मकान मालिक
- कुछ ग्रामीण

तथा

- चूहे

भाषा में मुहावरा बन चुके 'पालने का पूत' का हिंदी रूपांतर जारी करते हुए मुझे आशा है मेरा यह विनम्र प्रयास राष्ट्रभाषा की मुख्यधारा में मेरी ओर से अंशदान के रूप में पहचाना जाएगा।

गौरी शंकर रैणा ने मेरी अन्य नाट्य कृतियां—'त्रिनाम' 'तोता' और 'आईना' भी हिंदी में अनुवादित की हैं। मैं उनका आभारी हूं। प्रस्तुत संकलन में 'त्रिनाम' भी शामिल किया गया है, यह नाटक भारतीय नाट्य संघ, इलाहाबाद के वार्षिक नाट्य महोत्सवों में भी प्रस्तुत हुए हैं।

मोती लाल क्यमू

पात्र



- जवान मसखरा
- बूढ़ा मसखरा
- झंडाबरदार
- राजा
- छोटा मंत्री
- बड़ा मंत्री
- बौना (पालने का पूत)
- सुद्धू बिलाव
- बुद्धू बिलाव
- मकान मालिक
- कुछ ग्रामीण

तथा

- चूहे

पालने का पूत

[जवान मसखरा दर्शकों के बीच में से आता है। उसके गले में नगाड़ा लटका हुआ है। नगाड़ा बजाता हुआ वह मंच की ओर आता है। तथा मंचाग्र पर खड़े होकर दर्शकों से कहता है]

जवान मसखरा : ढम-ढम-ढम सज्जनो ! अपनी-अपनी जगहों पर खामोशी से बैठे रहो। इस क्षेत्र का बूढ़ा मसखरा सात दिनों से घर नहीं आया है। इसी कारण सभी भांड उसे नगर-डगर ढूंढते फिर रहे हैं। अपनी-अपनी जेबों का ध्यान रखो। कहीं ऐसा न हो कि इधर हमारा बूढ़ा मसखरा आप में किसी की जेब में घुस कर, छिप कर **बैठे !** ढम ! ढम ! ढम !

लोगो ! यद्यपि सरकार भिखारियों को पकड़ कर ले जा रही है, लेकिन बूढ़ा मसखरा कोई नया स्वांग रचा कर आप लोगों से पैसे वसूलने के बहाने यहीं कहीं प्रकट न हो जाये। इसलिए आप सब को मैं सावधान कर रहा हूँ कि आप में से कोई उसे बिना रसीद के एक पैसा भी न दे। क्योंकि भाँडों ने घोषणा की है कि जब तक वे आप को अपना स्वांग न दिखायें आप उन्हें

एक पैसा भी न दें, फिर चाहे वे अपनी मिट्टी प्लीद करायें या आपकी ! ढम ! ढम ! ढम !

तो सज्जनो हमारा यह तमाशा देखकर आपके बच्चे बूढ़े मसखरे की संगत में आकर खुद मसखरे बनने का इरादा न कर बैठें। इसलिए यदि हमारा मसखरा आपके बीच में कहीं छिपा है तो उसे फौरन मंच पर हाजिर करो। नहीं तो मैं ढम ! ढम ! ढम ! बजा कर आफत मचा दूंगा। आफत !

[पर्दा उठता है]

[बूढ़ा मसखरा न जाने कहां से किन विचारों में डूबा हुआ है। जवान मसखरा तेज गति से गोलाकार चक्कर काटता हुआ नगाड़ा बजाते हुए अचानक बूढ़े मसखरे को देख लेता है।)

जवान मसखरा : बाप रे बाप !

(बूढ़े मसखरे के कान के पास जाकर नगाड़े पर थाप देता है। ऐसा लगता है जैसे वह कुछ भी न सुनता हो) सज्जनो ! मैं बेकार इसे आप लोगों के बीच में ढूंढ रहा था। अरे ! यह मसखरा तो पहले से ही मंच पर अपने स्थान पर विराजमान है और न जाने किन विचारों में डुबकी लगा रहा है।

[बूढ़े मसखरे के कान में ज़ोर से नगाड़ा बजा कर]

ढम ! ढम ! ढम ! ढम ! ढम ! ढम !
अरे मसखरे सात दिनों के भूखे,
ढूंढ ढूंढ कर तुझे थका मैं कितना रे।
क्या दुख है तुझको रे तू किस में खोया,
उठके अपना स्वांग दिखा तू सबको रे।

(बूढ़ा मसखरा दूसरी ओर मुंह फेर लेता है)

जवान मसखरा : बीबी बच्चों को छोड़कर कहाँ चला गया था, रे मसखरे ! (बूढ़ा मसखरा फिर दूसरी तरफ मुंह फेर लेता है। जवान मसखरा भी उसी की ओर मुड़ता है)

अभी समय है बहुत पड़ा।
अरे मसखरे वापस आ।

(बूढ़ा मसखरा दूसरी ओर मुड़ता है)

जवान मसखरा : सभी भांड अनाज मांगने चले गये, तू कब जायेगा रे ? (दर्शकों की ओर) हे सज्जनो ! लगता है इस ने न उठने की कसम खाई है। है कोई उपाय इसे उठाने का ? (सोचकर) ओह ! समझ गया ! सीधी उंगली से घी नहीं निकलता। दो ही रास्ते हैं। ज़ोर ज़बरदस्ती या चाँदी के सिक्के।

जवान मसखरा : (बूढ़े मसखरे के पास आकर) मैं पुलिस बुला लूंगा वरना उठो।

बूढ़ा मसखरा : नहीं उठूंगा।

जवान मसखरा : शुक्र है। मैं तो समझ रहा था कि इसकी जीभ ही कट गयी है। (मसखरे से) उठो मैं पंचायत बुलाऊँगा।

बूढ़ा मसखरा : जा मैं नहीं उठता।

जवान मसखरा : बीवी बच्चों को बुलाकर हंगामा करवाऊंगा।

बूढ़ा मसखरा : नहीं उठूंगा।

जवान मसखरा : इन सबके (दर्शकों की ओर संकेत करके) जूते तुझपर वारूंगा। उठो न।

बूढ़ा मसखरा : मैं ना उठूंगा।

जवान मसखरा : सात दिनों से भूखे पेट को भर दूंगा।

बूढ़ा मसखरा : मैं फिर भी नहीं उठूंगा।

जवान मसखरा : (दर्शकों से) अब क्या लाकर दूं इसे (मसखरे से) अच्छा तो मत उठ (सोच कर) मगर ठहरो। अब बूढ़े मसखरे मान जाओ। उठो।

बूढ़ा मसखरा : हरगिज नहीं उठूंगा।

जवान मसखरा : पूरे सौ रुपये गिन कर दूंगा। उठो जी।

बूढ़ा मसखरा : सौ रुपये। लो मैं उठा।

जवान मसखरा : या खुदा ! घूस ने किस-किस को बस में नहीं किया। इस बूढ़े मसखरे की बात ही क्या।

बूढ़ा मसखरा : कहाँ है सौ का नोट, लाओ वरना अपने घर जाओ।

जवान मसखरा : कहाँ से लाऊं मैंने तो अभी इन लोगों से एक पैसा नहीं लिया है।

बूढ़ा मसखरा : हाय रे गजब कैसा है ढब !
फोकट में तमाशा देखेंगे सब।

जवान मसखरा : बाद में देखेंगे यह सब। पहले बता तू किन ख्यालों में डूबा था। सात दिन कहां रहा। तेरे दर्शन क्यों दुर्लभ हो गये थे।

बूढ़ा मसखरा : अरे क्या बताऊं। नया तमाशा रचने के लिए सात दिन के लम्बे मार्ग पर चल पड़ा था।

जवान मसखरा : बाप रे ! कुछ हाथ भी आया या जाना हुआ बेकार।

बूढ़ा मसखरा : नहीं सरकार ! देखा मैंने राजा का दरबार।

जवान मसखरा : इस लोक का या परलोक का ?

बूढ़ा मसखरा : बीहड़ सुनसान में देखा मैंने एक नज़ारा।

जवान मसखरा : लौट आये हो या अभी उसी लोक में घूम रहे हो ?

बूढ़ा मसखरा : देखा मैंने चंदा की चांदनिया में राजा की अटरिया ऊंची......

जवान मसखरा : ऊंची अटरिया ! हाय रे हाय ! कहीं वहां तूने देखी कोई जन्नत की हूर ।

बूढ़ा मसखरा : चुप बेशऊर ! देखी मैंने लटकती वहां द्वार पर एक ज़ंजीर ।

जवान मसखरा : मारे गये । कहीं तुम भी उससे लटक तो नहीं गये ।

बूढ़ा मसखरा : मैं नहीं वहां लटक रहा था घंटा......।

जवान मसखरा : अफसोस ! वह ज़ंजीर अगर खिंच जाये तो ये लोग घबरा के भाग जायेंगे । कहेंगे कि दमकल की घंटी घनघना रही है । आग-आग-आग......

बूढ़ा मसखरा : घबराओ मत (रुक कर) सुनो घंटी तो सचमुच बज उठी आओ देखें राजा का रंगमहल । बजने लगी घंटी । आओ यहां छिप बैठ कर देखें राजा की अटरिया, देखें उसका रंग सुनहरिया । (दोनों का प्रस्थान ! दूसरा परदा उठता है । मंच पार्श्व में राजा का दरबार और बायीं ओर एक चौखट जिसके साथ एक ज़ंजीर से एक घंटी लटक रही है । जो किसी के खींचने से बज रही है । महल में झंडाबरदार की आवाज़ ।)

आवाज़ : होशियार ! खबरदार ! (झंडाबरदार अंदर आता है) राजदरबार की ड्योढी पर न जाने कौन फरियादी न्याय की घंटी बजा रहा है । इसलिए न्यायप्रिय महाराज अभी अपना दरबार बुलायेंगे । उनके सलाहकार उनके दो मन्त्री होंगे । सावधान, महाराज पधार रहे हैं ।

(महल का परदा उठाते हुए महाराज तथा दो मंत्री प्रवेश करते हैं । एक मन्त्री की दाढ़ी सफेद है । दूसरे की काली)

राजा : मन्त्रियो, कोई दुखियारा हमारे पास फरियाद करने आया है। उसे हाजिर किया जाये।

छोटा मंत्री : ओ झंडाबरदार! बड़े आदर सत्कार के साथ ज़ंजीर खींचने वाले फरियादी को हाजिर करो।

झंडाबरदार : न्यायप्रिय महाराज का प्रताप चारों ओर फैले, मैं अभी उस फरियादी को पेश करता हूं।

राजा : मंत्रियो, इतने वर्षों से किसी ने भी इस ज़ंजीर को नहीं खींचा हम समझते रहे कि हमारे राज्य में सभी खुशहाल और सुखी हैं। लेकिन कौन है यह जिस के साथ अन्याय हुआ है।

(घंटा बजना बन्द हो जाता है) झंडाबरदार का प्रवेश)

झंडाबरदार : महाराजा का न्याय सदा बना रहे। एक देहाती बालक दरबार में उपस्थित है। यही बालक ज़ंजीर को दांतों से खींच-खींच कर न्याय की घंटी बजा रहा था।

दोनों मंत्री : अजीब बात है। क्या वह अपने दांतों से, ज़जीर खींच रहा था।

बालक : महाराज! मैंने न्याय की घंटी बजायी है। लेकिन इसके बिना मेरे पास कोई उपाय ही नहीं था।

छोटा मंत्री : फरियादी तुम्हारा नाम क्या है? तुम कहां से आए हो?

बालक : महाराज मैं पालने का पूत कहलाता हूं—पालने का पूत

दोनों मंत्री : पालने का पूत!

पालने का पूत : जी हां, मैं रंगपुर गांव से आया हूं।

राजा : फरियादी! बिना किसी डर के बताओ, तुम्हारे साथ क्या अन्याय हुआ है?

पालने का पूत : महाराज किसी भी व्यक्ति ने मेरे साथ कोई अन्याय नहीं किया है और न ही मेरे साथ कोई जुल्म हुआ है।

बड़ा मंत्री : तो तुम किस लिये घंटा बजा रहे थे।

पालने का पूत : हुजूर मैं जन्म का अभागा हूं और इसी से अब तक दुख भोग रहा हूँ।

राजा : फरियादी साफ-साफ कहो कि तुम कहना क्या चाहते हो ?

पालने का पूत : क्या बताऊं महाराज ! मुझे अपने माता पिता ने पूरे बीस साल पालने में रख कर पाला है। उन्होंने मेरे तक बाहरी दुनिया की रोशनी तक न आने दी।

छोटा मंत्री : इस का कारण ?

पालने का पूत : ज्यों ही मेरा जन्म हुआ गांव के कुछ स्यानों ने भविष्यवाणी की कि यदि मुझे सूर्य की एक किरण भी दिखाई दी तो मैं अपने माता-पिता की मृत्यु का कारण बनूंगा। इसीलिए उन्होंने मुझे पूरे बीस साल तक अन्धेरी कोठरी में पाला पोसा। रात के अंधेरे के सिवाय मुझे किसी भी समय बाहर निकलने की इजाजत न थी।

दोनों मंत्री : यह, एक, अजीब दास्तां है।

राजा : इससे तुम्हारे साथ कौन-सा अन्याय हुआ ?

पालने का पूत : महाराजा मुझे मेरी किस्मत ने लूटा।

राजा : मतलब।

पालने का पूत : बीस साल बाद मेरे माता-पिता की मृत्यु हो गयी और जब मैं अंधेरी कोठरी से और पालने से बाहर निकला तो मुझे सारी दुनिया अजनबी लगी। मैं कोई काम करने के लायक न रहा।

राजा : क्यों ?

पालने का पूत : पालने का पूत होने के कारण सबको मैं अजनबी और अजीब लगा। कोई भी मुझ से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखने या मित्रता करने को तैयार न हुआ।

राजा : लेकिन इससे भी तुम्हारे साथ कौन-सा अन्याय हुआ।

पालने का पूत : मैं अपनी जीविका कमाने के लिए कोई काम न कर सका।

राजा : क्यों ? तुम्हारे हाथ पैर तो दुरुस्त हैं और तुम अंगहीन भी नहीं हो।

पालने का पूत : महाराज, मैं सच कहता हूं मैं कोई काम करने योग्य नहीं हूं। क्योंकि मैंने बचपन से कोई काम-धन्धा नहीं किया।

राजा : तुम चाहो तो अब भी कुछ कर सकते हो।

पालने का पूत : महाराज, मुझ में तो न इतना धीरज है न इस और कोई प्रवृत्ति ही है और कोई मेरा मार्ग दर्शक भी नहीं है। लोग मुझे देखते ही भाग जाते हैं।

बड़ा मंत्री : क्यों ?

पालने का पूत : क्योंकि मैं इसी उम्र में बाहर निकला और किसी ने भी मेरा बचपन नहीं देखा। (रोने लगता है) मेरा ज्यादा सारा बचपन तो घर की चारदीवारी में ही खप गया।

छोटा मंत्री : तो सचमुच तुम्हें कोई काम नहीं आता।

पालने का पूत : यदि कोई काम जानता तो यहां क्यों चला आता।

राजा : तुम अभी भी कोशिश करके कोई काम सीख सकते हो।

पालने का पूत : महाराज सो कैसे ? जब भी मैं कोई काम सीखने की कोशिश करता हूं मेरे हाथ पैर जैसे अकड़ जाते हैं और मुझे अपना सारा शरीर टूटता हुआ-सा लगता है। खाने के बरतन से मुंह लगा कर खाना खाता हूं। हाथ से नहीं।

दोनों मंत्री : अजीब बात है।

राजा : तुम हम से क्या चाहते हो ?

पालने का पूत : महाराज नौकरी।

राजा : कैसी नौकरी ?

पालने का पूत : महाराज जिस योग्य आप मुझे समझते हो।

बड़ा मंत्री : क्या चौकीदारी कर सकते हो।

पालने का पूत : कैसे हजूर ! मैं घूमने फिरने लायक हूं ही नहीं।

छोटा मंत्री : तो तुम पुलिस की नौकरी कर सकते हो ?

पालने का पूत : हज़ूर कद से बौना हूं।

बड़ा मंत्री : तो फिर माली का काम कर सकते हो ?

पालने का पूत : हज़ूर मुझ में वैसी फुर्ती कहां ?

छोटा मंत्री : मज़दूरी कर सकते हो ?

पालने का पूत : हुज़ूर मैं बोझ नहीं उठा सकता।

बड़ा मंत्री : तुम पढ़े लिखे हो ?

पालने का पूत : नहीं हज़ूर मैं सिर्फ लोरियां गा सकता हूँ।

राजा : अरे तो तुम गा सकते हो।

पालने का पूत : नहीं महाराज ! न मेरी आवाज़ सुरीली है न मुझे सुर-ताल का ज्ञान है।

राजा : तो तुम जानते क्या हो ?

पालने का पूत : महाराज पालने में पड़े-पड़े नींद करना, खर्राटे भरना और गुनगुनाना।

राजा : तो फिर कैसा काम दें जो तुम्हारी दाल-रोटी चल सके ?

पालने का पूत : महाराज इसीलिए तो मैं आपकी शरण में आया हूँ।

दोनों मंत्री : महाराज इसकी मत मारी गई है। न जाने क्या इधर-उधर की कह रहा है।

राजा : तो फिर कौन-सा ऐसा काम है जो तुम कर सकते हो ?

पालने का पूत : कद में हूँ छोटा महाराज !
पालने में है मेरा राज !!
ना है कोई मेरा नाम !
ना मैं जानूं कोई काम !!
बड़ी सुस्त है मेरी चाल !
दिखलाता हूँ एक कमाल !!
उसे बताता हूँ सरकार !
मैं हूँ पक्का चूहामार !!
सब से अद्भुत मेरा काज !
मारूं चूहे मैं महाराज !!

दोनों मंत्री : (ठहाका) हा ! हा ! हा ! हा ! हा !

राजा : आ हा हा हा !!! तो तुम चूहे मार सकते हो ?

पालने का पूत : हां महाराज ! मेरा निशाना कभी नहीं चूकता आज तक जो भी चूहा मेरे पालने से गुजरा है जिन्दा नहीं बचा। चूहा मारने के समय मेरी बांहें एकदम फड़क उठती हैं।

राजा : परन्तु चूहा मारने के लिए आज तक हमने किसी भी आदमी को नियुक्त नहीं किया है।

पालने का पूत : महाराज, मैंने सुना है चूहे हमारे घरों और खेतों को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं। अगर मुझे आज्ञा मिले तो मैं सभी चूहों का इस देश से सदा के लिए सफाया कर दूं।

राजा ; उससे हमें क्या लाभ होगा ?

पालने का पूत : महाराज, उस से सभी लोग खुश होंगे, घर में भी गांव में भी सभी खुश और खुशहाल।

राजा : यदि हम तुम्हें चूहे मारने के लिए नियुक्त करें तो इसका क्या सबूत होगा कि तुम ने वास्तव में चूहे मारे हैं।

पालने का पूत : महाराज मैं उन चूहों की दुमें काटकर आपके सामने पेशकर दूंगा।

राजा : तो तुम सचमुच चूहे मार सकते हो ?

पालने का पूत : लेकिन एक विनती है महाराज !

राजा : वह क्या ?

पालने का पूत : मेरे साथ दो सरकारी कर्मचारी भी भेज दीजिए ताकि मुझ पर कोई चोरी का इलज़ाम न लगाए।

राजा : स्वीकार है।

पालने का पूत : दूसरी विनती है महाराज !

राजा : जल्दी बोलो !

पालने का पूत : यदि मैं चूहों की साढ़े सात मन दुमें पेश करूं तो मुझे सरकारी सम्मान दिया जाए।

राजा : हां ! हां ! हां ! यह कौन-सी बड़ी बात है यदि तुम थोड़े ही दिनों में यह कार्य करोगे तो तुम अवश्य ही सम्मान के पात्र बनोगे।

पालने का पूत : महाराज हुकमनामा तो दीजिए।

राजा : मंत्री जी, इस रंगपुर के बौने को हुकमनामा दिया जाये।

बड़ा मंत्री : (हुकमनामा पढ़कर) रंगपुर के इस बौने को यह आज्ञा दी जाती है कि वह इस देश के चूहों का सफाया करे। इस काम में हमारे दो कर्मचारी सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव इसे सहयोग देंगे।

(राजा हुकमनामे पर हस्ताक्षर करता है)

लो यह लो हुकमनामा

[इसी के साथ दूसरा परदा गिरता है। जवान मसखरा और बूढ़ा मसखरा बाहर आते हैं।]

जवान मसखरा : तो पालने का पूत चूहा मार अभियान पर निकल पड़ा।

बूढ़ा मसखरा : मरता क्या न करता ! मगर भई मानना पड़ेगा कि पालने का पूत किस्मत वाला निकला जो राजा ने उसे चूहा मार हाकिम मुकर्रिर किया और साथ में दो अंग-रक्षक दिये सुद्धू बिलाव......

जवान मसखरा : और बुद्धू बिलाव। भई मसखरे ! यह तो बताइये कि यह दोनों उसके किस काम के थे ?

बूढ़ा मसखरा : तुम तो जानते हो कि पालने का पूत कद में छोटा था मगर उसका दिमाग शैतान से भी तेज था। ये दोनों उसके सलाहकार थे। यानि—समझे कुछ समझे कि नहीं ?

जवान मसखरा : समझा भैया समझा। तो क्या उन्होंने इस देश के सारे चूहे खतम कर दिये ?

बूढ़ा मसखरा : कौन जाने कहावत है, मछेरों ने जाल बिछाये और मछलियों ने भागना सीखा।

जवान मसखरा : उन्होंने पूछें जमा की या नहीं।

बूढ़ा मसखरा : किसने देखा, पर यह सुना है कि शुरू-शुरू में उसने नेकनीयती और ईमानदारी से काम किया। लोग भी खुश हुए—परन्तु......

जवान मसखरा : परन्तु क्या ?

बूढ़ा मसखरा : वही जो होता है।

जवान मसखरा : वही ? —अरे भई क्या होता है।

बूढ़ा मसखरा : पहले तो अकेला बौना था बाद में अंगरक्षकों समेत तीन हो गये।

जवान मसखरा : तीन ! तीन हुए तो क्या हुआ ?

बूढ़ा मसखरा : तीनों मिल गये हो गयी यारी।
तीनों ने की सांझेदारी ॥
जनता सारी उनसे हारी।
चारों तरफ थी मारा मारी॥

काम में हेरा फेरी भारी।
तीनों ने की सांझेदारी ॥

जवान मसखरा : होती क्या है सांझेदारी ?

बूढ़ा मसखरा : महाराज को क्या मालूम था कि पालने का पूत उल्टे सीधे काम करेगा। उन्होंने सच्चे दिल से उसका सुझाव स्वीकार किया था। परन्तु उसने न जाने क्या-क्या गुल खिलाये।

जवान मसखरा : गुल खिलाये ?

बूढ़ा मसखरा : हाँ, शुरू-शुरू में तो चूहे पकड़े, उनकी पूंछें काटता रहा। और उन्हें मारता गया।

जवान मसखरा : बाद में क्या हुआ ?

बूढ़ा मसखरा : मैं क्या उसका चमचा हूँ जो मुझे मालूम हो। पर जो कुछ मैं जानता हूँ सो बताऊं।

जवान मसखरा : हाँ बताओ, मैं सुनता हूँ पूरा ध्यान देकर।

बूढ़ा मसखरा : सबको किया परेशान मुश्किल में थी सबकी जान।

जवान मसखरा : किस को किया परेशान ?

बूढ़ा मसखरा : लोगों को, किसानों को, सभी हुए परेशान।

जवान मसखरा : समझा। पर कैसे ?

बूढ़ा मसखरा : किसी अनाज की कोठरी या मकान के पास पहुंचते ही मुन्ना बौना शोर मचाता है—यहां चूहा घुस गया है। और चूहे के बच्चे भी पकड़ो इन्हें पकड़ो—फिर चमचों को हुक्म देता है जाओ कोठरी गिराओ, खोद डालो नींव—चूहे निकालने हैं।

जवान मसखरा : पर चूहे उसके हाथ लगते थे क्या ?

बूढ़ा मसखरा : अरे, उसका चूहों से क्या सरोकार। चमचे सारा काम खुद ही निभा लेते थे।

जवान मसखरा : कैसे ?

बूढ़ा मसखरा : वे दोनों किसानों से कार्रवाई मांगते थे।

जवान मसखरा : कार्रवाई। वह क्या बला है ?

बूढ़ा मसखरा : अबे, कार्रवाई माने नोट। बड़े चूहे के लिए पांच रुपये और चूहे के बच्चों के लिए एक रुपया।

जवान मसखरा : यानि कि व्यापार।

बूढ़ा मसखरा : बौना था हाकिम चूहा मार।
टिप कमिशनर उसके दो यार।

बूढ़ा मसखरा : कोई मुसीबत क्यों मोल ले, आ बैल मुझे मार अबे, पता है—अंगरक्षकों ने दो-दो बिल्लियां पाल रखी हैं। और कंधे पर दुनाली बन्दूकें लटकाये निकलते हैं।

जवान मसखरा : सो किस लिये ?

बूढ़ा मसखरा : सुनो शाम होते ही किसी घर के पास शोर मच जाता। इस घर में चूहा घुस गया है। फिर बिल्लियों को खुला छोड़ दिया जाता है। बिल्लियाँ पूरे घर में ऊपर कभी नीचे, कभी रसोई घर में कभी बच्चों के कमरे में कभी रसोई में कभी बैठक में तो कभी सामान घर में जातीं। मकान मालिक आता है तंग, घर में छिड़ जाती है

जंग। सभी मुहल्ले वाले तमाशा देखने निकलते हैं। बच्चे डर जाते हैं। औरतें चिल्लाती हैं।

जवान मसखरा : मतलब बिल्लियाँ आफत मचाती हैं।

बूढ़ा मसखरा : और नहीं तो क्या बौना और उसके चमचे तब तक नहीं जाते हैं। जब तक कि घर के सब बरतन-भांडे टूट-फूट न जायें। या तो चूहा पकड़ते हैं या घर के मालिक से नोट वसूलते हैं।

जवान मसखरा : (दर्शकों से) समझे आप, कैसी होती है। चूहेमार हाकिम की हाकिमी। (बूढ़े से) हे मसखरे! इसका मतलब तो यह हुआ कि इन हाकिमों को किसी भी घर में बेधड़क घुसने का अधिकार था।

बूढ़ा मसखरा : इन्हें सरकारी हुक्मनामा जो मिला है।

(बाहर शोर सुनाई देता है)

जवान मसखरा : यह शोर कैसा है। जरा हम भी सुनें ?

बूढ़ा मसखरा : अरे-अरे रे। ये तो बौने राम की ही आवाज़ लगती है।

जवान मसखरा : आ गयी मुसीबत। कहीं हमें भी पकड़ कर ना ले जाये। और हमारी भी पूंछ न काट दी जाये।

बूढ़ा मसखरा : तुम्हारी कौन-सी पूंछ है ?

जवान मसखरा : पूंछ नहीं तो मूंछ तो है।

बूढ़ा मसखरा : हा-हा-हा-हा-हा (मसखरों का प्रस्थान)

(पालने का पूत, दो अंगरक्षकों और एक मकान मालिक नागरिक का प्रवेश जैसे लड़ रहे हों)

पालने का पूत : हरगिज नहीं, या हम मकान की नींव खुदवायेंगे या।

बुद्धू बिलाव : या फिर नकद कार्रवाई—हां...।

मालिक : अरे भैया! मेरे मकान की एक-एक ईंट ढह जायेगी।

पालने का पूत : इस में भला हम क्या कर सकते हैं। चूहा तो तुम्हारे ही मकान की नींव में घुसा है। जब तक उसे पकड़ न लें हम कैसे जायें।

मालिक : हां हां। घुस गया होगा। मगर वह आया कहां से। आप ही लोग तो उसे अपनी जेब में लाये थे। और मेरे मकान के पास लाकर छोड़ दिया।

सुद्धू बिलाव : हम कहां से लाते ? शर्म नहीं आती झूठ बोलते।

बुद्धू बिलाव : लाया भी हो तो क्या। तुम्हारे घर के चूहे भी तो पकड़ निकालने हैं। सुना नहीं है। —पराया चूहा घर के चूहों को भगा देता है।

सुद्धू बिलाव : हम अभी बिल्लियों को खुला छोड़ देंगे फिर देखते हैं। तुम्हारे घर से चूहे निकलते हैं या नहीं। नहीं निकलते तो हम मकान की नींव खोद डालेंगे।

मालिक : ऐं मकान गिरा दोगे। कैसी अंधेरनगरी है। अरे मेरा सारा मकान ईंट-ईंट ढह जायेगा।

पालने का पूत : बकवास बन्द। हम जानते हैं तुम्हारे घर में चूहे घुस गये हैं जो तुम्हारे घर की एक-एक ईंट को खोखला कर देंगे।

मालिक : आपकी ही मेहरबानी से।

पालने का पूत : जाओ भई, गिरा दो मकान, तमाशा क्या देख रहे हो।

मालिक : अरे कहां जाते हो। कैसा अन्याय है।

पालने का पूत : हम नहीं जानते अन्याय-वन्याय हम तो सरकार की आज्ञा का पालन कर रहे हैं अभी देखो चूहे अन्दर से पकड़ कर लाते, हैं मारते हैं। पूंछें हम ले जायेंगे और मांस यह बिल्लियां खायेंगी।

सुद्धू और बुद्धू : म्याओं।

मालिक : पकड़ लो मना किसने किया है। पकड़ने ही हैं तो मुझे एक चूहेदानी दिलवा दो। रात में चूहे फसेंगे सुबह आकर तुम ले जाना।

सुद्धू बिलाव : क्यों क्या चूहेदानी बाजार में नहीं मिलती। खरीदते तो तुम्हारे घर में एक भी चूहा न होता।

मालिक : पर मुझे क्या पड़ी थी जो मैं चूहेदानी खरीदता।

पालने का पूत : तभी तो तुम्हारे घर में चूहे हैं। अभी उन को नमूदार करो।

[दोनों बिलाव जाने लगते हैं]

मालिक : कहां जा रहे हो भई ? तुम कहीं सचमुच मेरा मकान गिराने तो नहीं जा रहे ?

बुद्धू बिलाव : गिरायें नहीं तो क्या करें। चूहों को ज़िन्दा कैसे छोड़ सकते हैं ?

सुद्धू बिलाव . नहीं तो कार्रवाई हाज़िर करो। हम चले।

मालिक : कितना देना होगा।

बुद्धू बिलाव : चूहे की कीमत पांच रुपये, बिल्लियों के खाने पीने की फीस दस रुपये, चूहेमार हाकिम का 'आन द स्पाट वेरीफीकेशन' फीस बीस रुपये। तथा टिप कमिश्नरी दफ्तर का खर्चा—बिना रसीद 50 रुपये।

मालिक : कुल कितना हुआ।

सुद्धू बिलाव : यही कोई सौ एक रुपया। जल्दी दे दो। अभी बिल्लियां तुम्हारे घर से बाहर निकाल लेते हैं।

मालिक : यह तो घोर अन्याय है। मैं सौ रुपये कहां से लाऊंगा ?

पालने का पूत : खोद डालो जी नींव वरना चूहा हाथ से निकल जायेगा।

मालिक : इतना गजब मत करो भई। आखिर यह चूहामार हाकिमी कितनी देर चलेगी।

पालने का पूत : तुम अब ज्यादा बकने लगे हो । कार्रवाई शुरू करो जी । गिरा दो इसका मकान ?

सुद्धू-बुद्धू : जिनाब एकदम ।

मालिक : ठहरो ठहरो यह लो 10 रु० और पीछा छोड़ो ।

सुद्धू-बुद्धू : अच्छा क्या समझा है हमको । तुम कहीं यह तो नहीं समझ रहे हो कि हम दस रूपल्ली लेकर चले जायेंगे । उठाओ अपने औज़ार ।

मालिक : तो बताओ कितना दूं ?

बुद्धू बिलाव : कुछ और ।

मालिक : यह लो और पांच रुपये ।

पालने का पूत : मगर एक शर्त पर ।

मालिक : कौन-सी शर्त ?

पालने का पूत : ज़रा इसे समझाओ ।

सुद्धू बिलाव : वोट किस को दोगे ?

मालिक : क्या मतलब ? मेरी मर्जी है, जिसे चाहूं उसे दे दूंगा ।

बुद्धू बिलाव : यह नहीं हो सकता है ।

सुद्धू बिलाव : हां । यह नहीं हो सकता है । नहीं मालूम कि हमारे हाकिम बौने महाशय अब चुनाव लड़ने वाले हैं और तुम्हें अपना कीमती वोट इन्हीं को देना है । नहीं तो हम चूहों को तुम्हारे घर में छोड़ आयेंगे और तुम्हारा सत्यानाश करवा देंगे ।

मालिक : न जाने किस बला से पाला पड़ा है ।

बुद्धू बिलाव : ज़बान सम्भाल कर बात करो और हमारे नारों का जवाब दो ।

मालिक : किन नारों का जवाब ?

सुद्धू बिलाव : चूहे रखना छोड़ दो ।

बुद्धू बिलाव : बौने राम को वोट दो।

पालने का पूत : याद रखना।

सुद्धू बिलाव : हमारा चुनाव चिन्ह है "चूहा"। अगर वोट नहीं दोगे तो म्याओ म्याओ से तुम्हारा पीछा न छूटेगा।

मालिक : मतलब ?

बुद्धू बिलाव : तुम्हारे घर में चूहे होंगे और हमारी बिल्लियां वहां कभी ऊपर तो कभी नीचे अपने लशकर लिये दौड़ती रहेंगी।...निकालो रुपये।

मालिक : (रुपये देते हुये) तो तुम पीछा कहां छोड़ोगे।

पालने का पूत : भूलना नहीं। इन्होंने तुमसे पन्द्रह रुपये लिये हैं, बाकी तुम्हारे पास हमारी अमानत के तौर पर तब तक हैं जब तक तुम हमें वोट दोगे—चलो जी।

सुद्धू बिलाव : (नारा लगाता है) चूहे तेरे घर में घुसें।

बुद्धू बिलाव : बौने बाबू को वोट दें (तीनों निकलने लगते हैं)।

सुद्धू बिलाव : अबे ओ बागड़ बिल्ले ! कहां चले ! ज़रा देखो तो क्या है ?

बुद्धू बिलाव : क्या है ?

सुद्धू बिलाव : अरे ये लोग ! इन्हें जानता है।

बुद्धू बिलाव : कौन लोग ? कैसे लोग ? कहां हैं ?

सुद्धू बिलाव : इस हाल में, इस रंगशाला में।

पालने का पूत : यह क्या करने आये हैं यहां ?

सुद्धू बिलाव : हज़ूर किस ख्याल में हैं आप ? यही तो मौका है !

पालने का पूत : कैसा मौका ?

सुद्धू बिलाव : सुनहरी मौका ! हज़ूर भाषण देने का मौका—हिः हिः हिः आप तो सब जानते हैं।

बुद्धू बिलाव : लेकिन हम यहां राजनीतिक भाषण कैसे दे सकते हैं ?

सुद्धू बिलाव : इतने बुद्धिमान होकर आप बुद्धू क्यों बनते हो। यही तो मौका है कि हम सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम से हाल किराये पर लें और भीतर राजनीतिक भाषण झाड़ना शुरू कर दें।

बुद्धू बिलाव : वाह ! क्या खूब ! हमें सचमुच समय का फायदा उठाना चाहिये। रहा सांस्कृतिक कार्यक्रम सो वह कार्य इन चूहेदानियों में बन्द चूहे प्रस्तुत करेंगे।

[संगीत – बुद्धू बिलाव चूहेदानियां लाता है। फिर पार्श्व में जाकर एक-एक कर के बहुत सारी चूहेदानियाँ लाता है। सुद्धूबिलाव वह चूहेदानियां दूसरे पार्श्व में ले जाता है। चूहों के मुखौटे पहन कर कुछ बच्चे मंच पर आते हैं दोनों गाते हैं]

दोनो : चूहे चूहे।

सुद्धू बिलाव : रंगमंच के चूहे।

बुद्धू बिलाव : लम्बी पूंछ वाले चूहे।

सुद्धू बिलाव : घर के चूहे।

बुद्धू बिलाव : बाहर के चूहे।

सुद्धू बिलाव : अगर-मगर करने वाले —

बुद्धू बिलाव : चूहे—चूहे चूहे !

सुद्धू बिलाव : राजनीतिक चूहे !

बुद्धू बिलाव : समाज के चूहे !

सुद्धू बिलाव : मर्यादा के चूहे !

बुद्धू बिलाव : बिन मर्यादा के चूहे।

सुद्धू बिलाव : शहर के चूहे।

बुद्धू बिलाव : गांव के चूहे।

चूहे : चूं चूं करने वाले चूहे चले कतार में आज
दुनिया भर की रिश्वत लेते और न आती लाज।

कभी न आती लाज
कभी न आती लाज
दफ्तर में कुर्सी पर बैठे, धरे-हाथ पर हाथ
और उधर भूखे बेचारे, कोई न जिनके साथ
कोई न जिनके साथ
कोई न जिनके साथ

दोनों बिलाव : यह सभी चूहे सुद्धू और बुद्धू बिलाव के पंजों तले रहने वाले चूहे हैं।

पालने का पूत : खामोश ! हमें चूहे गिनने हैं या भाषण देना है।

सुद्धू बिलाव : हजूर भाषण ! राजनीतिक भाषण !

पालने का पूत : ठीक। मगर बोलूं क्या ?

सुद्धू बिलाव : हजूर राजनीति ! इलेक्शन मैनिफैस्टो यानि चुनाव घोषणापत्र।

पालने का पूत : मगर किन को सुनाऊं।

बुद्धू बिलाव : जिनाब उन चूहों को।

सुद्धू बिलाव : अरे बागड़ बिल्ले ! बकवास बन्द कर। श्रीमान् ! इन लोगों को, यही वह लोग हैं जो इस किस्म के भाषण सुनते हैं, सुनकर गले से उतारते हैं और फिर भूल जाते हैं।

पालने का पूत : और भूल कर ?

सुद्धू बिलाव : हजूर अपने-अपने कमरों में, ड्राइंगरूमों में, सड़कों और गलियों में, चूहों की मैंगनियां गिनते हैं।

पालने का पूत : मतलब ! मैं कुछ समझा नहीं ?

बुद्धू बिलाव : श्रीमान् इसी को कहते हैं ब्लैकमनी की माया। लोगों को नारेबाजी में व्यस्त रखना और अपना काम निकालना।

पालने का पूत : सो कैसे ?

सुद्धू बिलाव : दरख्वास्तों और शिष्टमण्डलों द्वारा ।

पालने का पूत : कैसी दरख्वास्तें कैसे शिष्टमण्डल !!

सुद्धू बिलाव : हां तो बिलाव, शुरू करो ।

बुद्धू बिलाव : हां जी शुरू...

(दोनों सारे रंगमंच पर घूम घूमकर नारे लगाते हैं)

सुद्धू बिलाव : गलियां ठीक कराओ जी ।

बुद्धू बिलाव : सड़कें ठीक बनाओ जी ।

सुद्धू बिलाव : गाओं को स्कूल दो ।

बुद्धू बिलाव : कसबे को बिजली दो ।

सुद्धू बिलाव : मेरे पूत को मास्टरी...

बुद्धू बिलाव : और बैलों को बैटरनरी ।

सुद्धू बिलाव : सारे करजे माफ करो ।

बुद्धू बिलाव : सभी टैक्स साफ करो ।

सुद्धू बिलाव : मुर्दों का राशन चालू रखो ।

बुद्धू बिलाव : महंगाई भत्ता लटकाये रखो ।

दोनों : बस करो जी ! बस करो !

पालने का पूत : हां हां बस करो । बस ! हमें ये सब आदतें बदलनी हैं यह तौर तरीके बदलने हैं ।

सुद्धू बिलाव : हज़ूर तो फिर शुरू कीजिए ना अपना भाषण ।

बुद्धू बिलाव : (गाने का प्रयास करते हुये) समय अनमोल है, ऐ हाकिम फिर यह चुनाव रहे न रहे ।

पालने का पूत : ठीक है मंच बनाओ ।

बुद्धू बिलाव : सब तैयार हैं—आइये—मंच पर पधारिये, पीछे से आइये (दोनों बौने को उठा कर कुर्सी पर बिठाते हैं)

पालने का पूत : (खड़ा होकर) आमन्त्रित सज्जनों ! भाइयो और बहनों ! अभी आप हमारा यह सांस्कृतिक कार्यक्रम देख रहे थे। इस कार्यक्रम में आपने देखा होगा चूहेदानियों में बन्द शहरी चूहों ने, गांव के चूहों और अन्य चूहों ने बहुत-बहुत उछल-कूद की...)

सुद्धू बिलाव : (बौने के कान में) जिनाब आप गलत बोले, यह नहीं बोलना था।

पालने का पूत : ओ हां ! यह बिलाव कुछ गलत बोल रहा है। मैं गलत नहीं बोल सकता हूं......हमने इस शहर के इस देश के लगभग सभी चूहे खत्म किये। जो बाकी हैं वे इन चूहेदानियों में बन्द हैं। हमने यह काम बड़ी लगन से, ईमानदारी और सच्चे दिल से हंसते-हंसते किया। क्योंकि हम आपके सेवक हैं।

दोनों बिलाव : आपके सेवक ! हिं...हिं...हिं...जनता के सेवक !

पालने का पूत : हमने स्वयं देखा कि आपको क्या-क्या कष्ट हैं। आपकी क्या-क्या समस्यायें हैं। हमारे योग्य और बुद्धिमान सलाहकारों ने आपसे सीधा सम्पर्क रखा है। ये लोग मुझे सुबह शाम आपकी समस्याओं से अवगत कराते हैं। अभी मैंने आपकी भलाई का सिर्फ एक ही कार्य किया है। मैंने चूहे खत्म किये हैं। अभी मुझे बहुत बड़े-बड़े काम करने हैं, और उसके लिये ज़रूरी है कि मैं चुनाव में खड़ा हो जाऊं। मुझे आशा है कि आप अपना कीमती वोट मुझे देंगे।

सुद्धू बिलाव : चूहामार हाकिम को...

बुद्धू बिलाव : वोट दो।

पालने का पूत : भाइयो ! यह नारे देने का समय नहीं है। यह सोच विचार करने का समय है। अपना कीमती वोट सच्चे अधिकारी को देने का समय है। जो सच्चे दिल से

लोगों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए काम करता हो—उस को वोट देने का वक्त है। चूहा एक छोटा-मोटा-सा जीव लगता है, मगर बड़ी ज़ालिम बला है। यह कितनी हानि पहुंचाता है आप खुद जानते हैं। जो कोई भी हमें चूहों से राहत दिलाये समझ लेना चाहिये कि वही आगे चलकर बड़ी-बड़ी समस्याओं का समाधान कर सकता है। इसलिये आपको चाहिये कि आप अपना वोट मुझे दें। रहा हमारा चुनाव घोषणा पत्र वह तो गंगा नदी के पानी की तरह साफ है जो सारे हिन्दुस्तान को सींचता है। हमारे लिये अनाज पैदा करता है। हमें पानी देता है। इस देश को सुन्दर बनाता है। और मैं क्या कहूं ? पोस्टर तो आपने देखे ही होंगे। शहरों और गांवों की गलियां पोस्टरों से भरी हैं। सभी कहते हैं कि गरीबी दूर करेंगे। लेकिन करता कोई नहीं है। भाइयो गरीबी तभी दूर हो सकती है जब चूहे खत्म होंगे। उनको मैंने खत्म किया, उनको मैं खत्म करूंगा। इसीलिये आपको चाहिये कि आप अपना वोट मुझे दें। हमारे नारे का जवाब दें।

(कुर्सी से उतरता है)

सुखू बिलाव : हमारा निशान भूल न जाओ।

बुद्धू बिलाव : चूहे पर तुम मोहर लगाओ।

(तीनों का प्रस्थान)

मालिक : (प्रवेश) यह तो सरासर ज़्यादती है। मैं अभी सारे शहर में हल्ला मचाऊंगा। सभी लोगों को सावधान करूंगा। हम अभी, इसी समय महाराज के पास फरियाद लेकर जायेंगे। न्यायप्रिय महाराज के शासन में भी हमारे साथ अन्याय हो सकता है क्या ?

दो मसखरे : (प्रवेश) हम भी तुम्हारे साथ हैं, शायद हमारी भी कोई सुने।

मालिक : चलो चलते हैं।

बूढ़ा मसखरा : मगर महाराज से कहें तो क्या कहें ?

मालिक : वो मुझ पर छोड़ो मैं उनको सब समझा दूंगा।

जवान मसखरा : क्या खाक समझा दोगे। लगता है तुम हमें बेवकूफ समझ रहे हो।

मालिक : ऐसी तो कोई बात नहीं।

जवान मसखरा : और नहीं तो क्या? क्या हम ऐसे ही वहां चले जायेंगे।

मालिक : तो कैसे ?

बूढ़ा मसखरा : मैं बताता हूं कैसे चलते हैं। पार्टी बनाकर, डेलिगेशन लेकर, दरख्वास्त लेकर, मैमोरेंडम लेकर...

मालिक : यह कौन-सी बड़ी बात है। जब हम सब मिलकर जायेंगे तो अपने आप डेलिगेशन बन जायेगा। और मैं उन्हें सारा हाल सुना दूंगा।

जवान मसखरा : नहीं हरगिज नहीं। इसमें ज़रूर तुम्हारा कोई स्वार्थ है।

बूढ़ा मसखरा : कसम खुदा की, क्या खूब कही! (नारा लगाकर) निहित स्वार्थ को—

जवान मसखरा : खत्म करो।

मालिक : अरे भई! मेरा इसमें कोई स्वार्थ नहीं। मैं तो बस चाहता हूं कि यह अन्याय खत्म हो जाये।

बूढ़ा मसखरा : तो इसीलिये, हम सब लोग मिलकर एक पार्टी बनायेंगे। एक संगठन। राजनीतिक संगठन।

जवान मसखरा : वाह भई वाह मेरे मुंह की बात छीन ली। ज़रा बताओ इस देश पर किस-किस ने शासन किया है।

मालिक : ऐरों-गैरों ने। अपने-परायों ने।

बूढ़ा मसखरा : नहीं, ज्यादा शासन किन का रहा ?

मालिक : परायों का। इसीलिये तो कहते हैं कि हिन्दुस्तान परायों के लिये सगा देश है।

बूढ़ा मसखरा : सच मगर यह बताओ क्या कभी मसखरों ने भी शासन किया है ?

मालिक : इतिहास के अनुसार कभी नहीं।

जवान मसखरा : इसीलिये क्यों न हम मसखरों का एक संगठन बनायें और चुनाव लड़ें। पालने के बौने को हरायें और सचमुच ऐसा शासन चलायें कि सदियों तक लोग हमारा नाम याद रखें।

बूढ़ा मसखरा : और हम भी बनें.........

दोनो मसखरे : (एक के बाद एक)
मिनस्टर ! यानि बजीर !
बजीर-ए-इधर
बजीर-ए-उ-ध-र
और बजीर-ए......

मालिक : (गुस्से से साथ बीच में) खुर्द-बुर्द ! बकवास बन्द करो। क्यों खामखाह दिमाग चाट रहे हो। क्यों, काम नहीं करने दोगे क्या ?

बूढ़ा मसखरा : नाराज क्यों होते हो। बोलो हमारी पार्टी में शामिल हो जाओगे ? लोगों की समस्यायें दूर करोगे ?

मालिक : कैसे दूर करेंगे। जिसे भी हमने देखा सौ मुखवाला देखा।

बूढ़ा मसखरा : (गम्भीरतापूर्वक) सुनो ! हर कोई मसखरा लोगों के मनोरंजनार्थ अपने सुन्दर मुखड़े पर रंग पोत कर

बुराइयों को दर्शाता है। जो समाज के लिए एक धब्बा होती हैं। मसखरे के हंसमुख चेहरे के पीछे उसकी तेज नजर और तीव्र बुद्धि होती है। और इस लिये मसखरे गलतियों और बुराइयों को सबके सामने बेनकाब करता है। मुंह से बात कहनी आसान है मगर कला के माध्यम से दर्शाना मुश्किल। मसखरों ने पिछले जमाने से अब तक उन सभी शासकों की तस्वीर प्रस्तुत की है। जिन्होंने राजनीतिक जीवन जीकर और जनता की नब्ज परख कर जनता को कुचला है। या जो आजकल झूठे वायदे कर सिर्फ अपनी जेबों को भरते हैं। या कुर्सी पाने के लिये सब्जबाग दिखाते हैं। और अन्त में सब कुछ भूल कर केवल खुद को आबाद करने में व्यस्त होकर और योजनायें बनाते हैं। मोटरों में घूमते हैं। बंगलों में रहते हैं। लेकिन जब लोग जाग जाते हैं और गरजते हैं। तो ये लोग धडाम से नीचे गिर पड़ते हैं। मगर......मगर......(दूसरे अंदाज में)। मुझे कुछ और कहना है मगर सच्चाई जरा कड़वी होती है। ना।

इसलिये मसखरे लोग सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन के नासूरों की तरफ इशारा करते हैं। गलतियों पर व्यंग्य करते हैं। ओहदकारियों का मजाक उड़ाते हैं। ताकि लोग समझदार बनें।

SABHA LIBRARY Date JAMMU

जवान मसखरा : हां, असल में यह खेल मसखरापन नहीं होता।...... बोलो बनायें हम पार्टी अपनी और लड़ें चुनाव ?

मालिक . मुझे मंजूर है। मगर पहले राजा के पास जायेंगे। और उसे इस अन्याय का हाल सुनायेंगे।

बूढ़ा मसखरा : एक शर्त पर।

जवान मसखरा : कैसी शर्त ?

बूढ़ा मसखरा : पार्टी का कोषाध्यक्ष मैं बनूंगा। और मुझे कोई भी रकम खर्च करने पर कोई रोक-टोक नहीं होगी।

जवान मसखरा : वही पुरानी बीमारी। हर बार ओहदों की लड़ाई ने हमारी ऐसी-तैसी की है। कामचोरी और कर्त्तव्य न निभाने की नीयत ने हालत और भी खराब कर दी है।

मसखरा : पहले पार्टी बनायेंगे। उसके बाद ओहदों के बारे में सोचेंगे।

मालिक : मन्जूर।

बूढ़ा मसखरा : तो आओ मिलाओ हाथ।

जवान मसखरा : हम सभी, अपने-आपको हाज़िर-नाज़िर जानकर, यह वायदा करते हैं कि हम, एक राजनीतिक पार्टी बनायेंगे।

(सभी दोहराते हैं और फिर एक-दूसरे के हाथ छोड़ते हैं)

बूढ़ा मसखरा : वाह बन गयी पार्टी।

जवान मसखरा : मसखरों का दल।

बूढ़ा मसखरा : मसखरों की पार्टी को--

जवान मसखरा : वोट दो—वोट दो।

मालिक : मगर हमारी पार्टी का चुनाव चिन्ह क्या होगा ?

बूढ़ा मसखरा : कुछ भी हो सकता है। ढोल, नगारा, खंजरी या तूम्बी।

जवान मसखरा : वाह ! वाह ! सभी बजाते रहेंगे।

मालिक : तो भई चलो अब राजा के पास चलते हैं।

बूढ़ा मसखरा : वाह चलो भाइयो इसी दम।

जवान मसखरा : बजे नगाड़ा ढम ! ढम ! ढम !

(सभी का प्रस्थान। पर मसखरे वापिस आते हैं)

बूढ़ा मसखरा : सुनो लगी है बजने।

जवान मसखरा : द्वार की घंटी लगी है बजने।

बूढ़ा मसखरा : सुनो हुआ आगाज़।

जवान मसखरा : टन-टन-टन-टन आवाज़।

बूढ़ा मसखरा : देखो राजा की अटरिया देखो राजा का दरबार।

जवान मसखरा : हम भी चलेंगे देखने, ऐ दिल हो जा होशियार।

दोनों : चलो रे भैया, चलो रे भैया राजमहल का देखें द्वार।
चलो रे भैया, चलो रे भैया राजा का देखें दरबार।
चलो रे भैया चलो रे भैया देखें न्याय का घंटा।
चलो रे भैया, चलो रे भैया, देखें सारा टंटा।

(चले जाते हैं)

पीछे का पर्दा उठता है। राजदरबार का दृश्य प्रकट होता है।

झंडाबरदार : होशियार! खबरदार! न्याय का घंटा बज रहा है। न्यायप्रिय राजा अभी दरबार बुलायेंगे।
(राजा का प्रवेश दोनों मंत्रियों के साथ)

राजा : ऐ झंडाबरदार! यह कौन हमसे न्याय मांगने आया है। उसे दरबार में उपस्थित किया जाये।

दरबान : (आगे झुक कर) महाराज आपकी आज्ञा का पालन अभी होगा।

राजा : मंत्रियो! कौन हो सकता है। जो न्याय के लिये घंटा बजा रहा है।

बड़ा मंत्री : न्यायप्रिय महाराज। शायद जनता को कष्ट है। इसी लिए लोगों का शोर सुनाई दे रहा है।

छोटा मंत्री : देखिये महाराज ! बहुत सारे लोग इसी ओर आ रहें हैं।

(झंडाबरदार और लोगों का प्रवेश। मसखरे साथ हैं)

लोग : देखिये हे न्यायप्रिय महाराज ! आपकी छत्रछाया सदा बनी रहे।

राजा : कहो तुम्हारे साथ क्या अन्याय हुआ है ?

मालिक : हे न्यायप्रिय महाराज ! क्या आपके कानों तक अभी यह बात नहीं पहुंची है कि आपके कर्मचारी कितने बेईमान और भ्रष्ट हो गये हैं।

राजा : कौन-सा कर्मचारी है वह जिसने लोगों पर जुल्म किया है। और हमें खबर तक नहीं।

लोग : महाराज पालने का पूत। वह चूहेमार बौना।

राजा : अच्छा तो वह !

महामंत्री : वह हमारा कोई कर्मचारी नहीं है।

राजा : हमने उसे सिर्फ चूहे मारने की अनुमति दी है। यह काम उसने अपने लिए स्वयं चुना था।

मालिक : महाराज उसने आपके हुकमनामे का बहुत अनुचित लाभ उठाया है।

राजा : अच्छा...क्या हिमाकत की है उसने ? हमें तो बहुत ही सीधा सादा और बुद्धू-सा लगा था। क्या जुल्म किया है उसने ?

मालिक : चूहे मारने के बहाने वह हमारे घरों में बिल्लियां छोड़ देता है।

राजा : इससे तुम को क्या कष्ट हो सकता है ? बिल्लियां तो चूहों का शिकार करती ही हैं। जिससे तुम्हारा धन-माल और संपत्ति सुरक्षित रह सकती है।

मकान मालिक : यहां तक तो ठीक था महाराज लेकिन उसने लोगों से घूस लेना शुरू किया।

राजा : यह कैसे हो सकता है। हमने उसके साथ दो सरकारी कर्मचारी रखे हैं।

छोटा मंत्री : सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव।

मालिक : क्या बतायें महाराज! वह तो चूहे लाकर लोगों के घरों में छोड़ आते हैं फिर कहते हैं कि चूहे मकान की नींव में घुस गये हैं और उन्हें पकड़ने के लिए खुदाई करवानी पड़ेगी। भला कौन अपने मकान को खोदने देगा। महाराज सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव तभी जाकर नींव खोदने से परहेज करते थे जब उन्हें रुपये मिलते। वरना लोगों को परेशान करते थे। वे लोग बिल्लियों को घरों में ले जाकर खुला छोड़ देते हैं जो ऊपर नीचे सब कहीं आफत मचा देती हैं। खाने पीने का सारा सामान चट कर जाती हैं। और घर में रहने वाले सभी लोगों को परेशान करती हैं।

राजा : तुम्हारे पास क्या सबूत है कि सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव रिश्वत लेते हैं।

लोगों में से एक : महाराज मैं बताता हूं। मैं एक किसान हूं मैंने धान की कटाई के बाद खलिहान बनाया था। शाम को वे तीनों आये और कहने लगे कि चूहे धान में घुस आये हैं हम धान की ढेरी को गिरा देंगे क्योंकि हमें चूहे पकड़ने हैं। महाराज! मेरी सारी मेहनत पर पानी फेर दिया। दिन भर में धान इकट्ठा करता और रोज़ शाम को वे आकर चूहे पकड़ने के बहाने सारा धान बिखेर देते थे। पूरे पचास रुपये देने पड़े तब कहीं पीछा छूटा।

सभी लोग : महाराज ऐसा ही हमारे साथ भी हुआ।

राजा : हे मन्त्रियो ! क्या तुम इस बारे में कुछ नहीं जानते हो। यह सब कैसे हुआ है ?

बड़ा मंत्री : महाराज़ हमारे पास अभी तक ऐसी कोई शिकायत नहीं आई।

लोग : अभी तक हम संगठित नहीं थे। एक एक करके हम सभी रिश्वतखोरी का शिकार हुए। मगर हममें एकता नहीं थी कि हम महाराज से शिकायत करने आते।

राजा : मन्त्रियो ? पालने के पूत और उसके साथ के दोनों कर्मचारियों सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव को इसी क्षण हमारे सामने उपस्थित किया जाये।

मालिक : महाराज उन्होंने टिप कमिश्नरी के नाम का एक दफ्तर खोल रखा है। इसी नाम से वे रुपये ऐंठते हैं और बिना रसीद के जुर्माना वसूलते हैं।

राजा : अच्छा ! ऐसा भी होता है ? इतना जुर्म होता है और हमें खबर तक नहीं।

(तभी पालने का पूत भारी बोरी घसीटते हुए मंच पर आता है। सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव सरकारी वर्दी में आते हैं।)

पालने का पूत : ज़ोर लगाओ।

सुद्धू और बुद्धू : हेइया...

पालने का पूत : और ज़ोर से...

तीनो : हेइया...ऽ...ऽ...।

राजा : कौन हैं यह लोग, कौन है ? यह हेइया...या...या किस लिए किया जा रहा है।

पालने का पूत : महाराज मैं पालने का बौना दरबार में हाज़िर हूं। यह है चूहों की पूंछों से भरी सात बोरियां। अब मैं राजकीय सम्मान का अधिकारी हूं।

राजा : अरे बौने ! बकवास बाद में, पहले इन लोगों के सामने इनकी बातों का जवाब देना होगा ।

पालने का पूत : महाराज किस बात का ?

राजा : तुम ने इन पे जुल्म किया है। इन से रिश्वत ली है ! चूहे मारने के बहाने इनको तंग किया है।

पालने का पूत : महाराज मुझे कुछ बोलने की इजाज़त हो तो बोलूं ।

राजा : कहो तुम्हें क्या कहना है ।

पालने का पूत : महाराज यह सब अवश्य मुझे दोषी और अपराधी समझते हैं। लेकिन मेरा मन साफ है । मैंने अपना काम बड़ी ही नेकदिली से किया है। मगर मेरे साथ जो दो सरकारी कर्मचारी तैनात हैं उनको मेरे काम से कोई दिलचस्पी नहीं थी। इसीलिये उन्होंने पैसे ऐंठने के बहाने लोगों से तरह-तरह के छल किये ।

छोटा मंत्री : तो क्या तुम सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव को इस सब का दोषी ठहराते हो ।

पालने का पूत : यह ठीक है महाराज। इन दोनों को चूहे पकड़ने या चूहे मारने में कोई दिलचस्पी नहीं थी। ये तो मुझे ही मारने के उपाय सोच रहे थे। जब मुझे कुछ न सूझा तो इनसे समझौता कर लिया ।

बड़ा मंत्री : कैसा समझौता ?

पालने का पूत : कि रुपये ऐंठने के लिये ये जो भी छल-कपट करें मैं भी उसमें इनका साथ दूं ।

राजा : तो तुम यह स्वीकार करते हो कि तुमने रिश्वत ली है और तुमने लोगों पर अत्याचार किये ।

पालने का पूत : महाराज मैंने केवल नीति अपनाई ।

बड़ा मंत्री : कौन-सी नीति ।

पालने का पूत : ऐसी नीति जिस से चूहे भी मरें और पूंछें भी जमा हों, महाराज की आज्ञा का पालन हो और मैं भी सरकारी सम्मान का अधिकारी बनूं। ये दोनों कर्मचारी भी खुश रहें और मेरा काम भी पूरा हो।

राजा : मगर जनता को जो तकलीफें दी गईं उसका जिम्मेदार कौन है ?

पालने का पूत : महाराज यह दोनों सरकारी कर्मचारी सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव।

लोग : हां महाराज इन्होंने ही हम से रुपये ऐंठे, नकद रुपये।

सुद्धू और बुद्धू : महाराज हम कसूरवार नहीं हैं। हमने कोई जुर्म नहीं किया है।

छोटा मंत्री : बकबास बन्द। अलग-अलग अपनी सफाई पेश करो।

सुद्धू बिलाव : महाराज जब तक मैं इस दरवार में था, मैं एक बहुत ईमानदार कर्मचारी था। लेकिन जब मैं इस चूहामार अभियान के सिलसिले में बौने साहब के साथ चला तो लोगों ने मुझे जल्लाद कहा। इस का बदला लेने के लिये मैंने उनसे रुपये वसूलने की तरकीब निकाली।

छोटा मंत्री : और तुम क्या कहना चाहते हो ?

बुद्धू बिलाव : महाराज नाम से तो मैं बड़ा इज्जतदार आदमी था मगर इस चूहामार अभियान के कारण मेरा नाम मिट्टी में मिल गया। मैंने सोचा कि चूहामार योजना जल्दी से जल्दी पूरी हो, इसलिये सभी लोहारों को चूहेदानियां बनाने के लिये मजबूर किया। लोगों ने जल्दी से जल्दी चूहेदानियां खरीदीं और चूहे पकड़ कर हमें दिये।

लोग : मगर ऐसा सबने तो नहीं किया।

सुद्धू बिलाव : लोहारों को लोहा सप्लाई करवाने के लिए परमिट बनवाने पड़े। परमिट दफ्तर में बहुत सारे रुपये खर्च करने पड़े। महाराज हमने सारा धन खुद नहीं हड़पा। बल्कि ऊपर तक सब को अपना-अपना हिस्सा देना पड़ा।

राजा : मन्त्रियो, यह क्या बोल रहा है ? यह किन पर इलजाम लगा रहा है।

बड़ा मंत्री : साफ साफ कहो कि तुम कहना क्या चाहते हो।
(आंखों से इशारा करता है)

बुद्धू बिलाव : महाराज जो कुछ सुद्धू बिलाव ने अभी कहा है। उससे मैं सहमत हूं।

राजा . हमें लग रहा है कि तुम अपना बयान बदल रहे हो।

बुद्धू बिलाव : महाराज मुझे और कुछ नहीं कहना है।

पालने का पूत : महाराज इस चूहामार अभियान में निकलने के कारण मुझे काफी अनुभव प्राप्त हुआ और लोगों के दुख-दर्द समझने का अवसर मिला है। मुझे आशा है कि अगर मुझे सरकारी सम्मान मिले तो मैं लोगों के उत्थान के लिए काम कर सकता हूं। इन की समस्याओं को हल कर सकता हूं। इन के दुःख दर्द को दूर कर सकता हूं।

राजा : मगर हमारे सामने तो तुम रिश्वतखोरी के मुल्जिम हो।

पालने का पूत : हरगिज नहीं महाराज !

बुद्धु बिलाव : कैसे नहीं ?

पालने का पूत : महाराज, जो भी पैसा लोगों से लिया गया है इन दोनों ने ही लिया है। मैंने किसी से एक फूटी कौड़ी नहीं ली। देखिये महाराज इस व्यक्ति से 15 रुपये लिये गये हैं। जो इन दोनों ने आपस में बांट लिये।

मालिक : लेकिन तुम तो कहते थे कि बाकी हिस्सा तेरे पास अमानत के तौर पर रहेगा। जब तक कि मैं तुम्हें वोट न दूं।

पालने का पूत : हां, क्योंकि मैं तुम्हारी बात आगे पहुँचा सकता हूं। बताओ भला चुनाव जीतने के बाद कैसे में तुम से अपनी अमानत वापिस ले सकता हूं। जब मैं न्यायप्रिय राजा का प्रतिनिधि हूँगा। (मकान मालिक खामोशी से लोगों को देखता है) न्यायप्रिय राजा! मैंने अपनी सफाई में जो कुछ कहना था कहा। ये दोनों अपराधी आपके सामने उपस्थित हैं। अब जो सम्मान या सज़ा आप मुझे देंगे स्वीकार है।

राजा : मंत्रियो आप की क्या राय है?

बड़ा मन्त्री : महाराज, मुझे पालने के बौने से एक सवाल पूछने की आज्ञा दी जाए।

राजा : आज्ञा है।

बड़ा मन्त्री : अगर ये दोनों कर्मचारी कामचोर थे तो तुम ने इनकी शिकायत पहले क्यों नहीं की?

पालने का पूत : उसमें समय लगता। अगर कोई और कर्मचारी भी मेरे साथ आता, वह भी यही करता।

छोटा मन्त्री : सो कैसे?

पालने का पूत : हे न्यायप्रिय महाराजा। जब-जब भी लोगों की भलाई के लिये कोई नये कानून बनाये जाते हैं या नया दफ्तर खोला जाता है तो पहले-पहल लोगों में उसकी काफी प्रतिष्ठा होती है। लेकिन धीरे-धीरे उसी दफ्तर के लोग या उसी कानून के संरक्षक ऐसे रास्ते निकालते हैं कि उस कानून का उल्लंघन होने लगता है। रिश्वतें ली जाती हैं। सभी चोरियां और उन चोरियों के उपाय एक ही जगह से शुरू होते हैं।

राजा : क्या ऐसा भी होता है ?

पालने का पूत : महाराज, जब तक सच्चाई प्रकट होती है । तब तक सत्यानाश हो चुका होता है। इसलिये महाराज न्याय के साथ-साथ कड़ाई और डर की भी ज़रूरत है।

राजा : हूँ ! यह सच है।

पालने का पूत : महाराज ! इन कर्मचारियों के साथ काम करते-करते और चूहामार अभियान के कारण अब इस प्रकार की बुराइयों को समाप्त किया जा सकता है । क्योंकि मैं अब इनके काम की सब चालें जान चुका हूँ जिनसे मैं लोगों का सही प्रतिनिधित्व कर सकता हूँ ।

(सभी लोग एक-दूसरे के कान में कुछ फुसफुसाते हैं।)

लोग : हम अपना वोट बौने महाशय को अवश्य देंगे।

राजा : अच्छा ! तुम लोग इसके बयान से इतना प्रभावित हो चुके हो ?

लोग : हां महाराज ! इसकी तमाम दलीलें प्रभावशाली हैं।

राजा : (खड़े होकर) तो मैं पालने के बौने को राजकीय सम्मान देने के लिये तैयार हूँ । इन दोनों कर्मचारियों के विरुद्ध अलग से कार्यवाही की जायेगी । फिलहाल इन्हें मुअत्तल किया जाता है।

दोनों मंत्री : महाराज बौने महाशय को मंत्रिमंडल में लिया जाये।

लोगग बोने के साथ : हम अपना वोट इसी को देंगे।

चूहा मार हाकिम को...

वोट दो। (सभी का प्रस्थान)

(बीच का परदा गिरता है। मसखरे प्रवेश करते हैं)

जवान मसखरा : इस हाथ का वोट इस जेब में और इस जेब का वोट इस हाथ में। बड़ा वोट-वोट चिल्लाते थे। हू हू। अब

बौना भी बरी है और लोग भी खुश हैं। एक शब्द भी तुम्हारे मुंह से नहीं निकला।

बूढ़ा मसखरा : मैं क्या कह सकता था। तमाशा करता क्या ?

जवान मसखरा : पालने के बौने के विरुद्ध, कुछ बोलते।

बूढ़ा मसखरा : हमने जैसे आज तक कब किया है। जो कोई भी अधिकारी बने उसके गुण ही तो गाये हैं।

जवान मसखरा : बस मुझ पर ही लगाम लगाना सीखा है। तुमने और कुछ नहीं।

बूढ़ा मसखरा : तो आओ अब दुआ मांगें।

जवान मसखरा : क्यों ? मसखरी नहीं करोगे।

बूढ़ा मसखरा : भई मैंने वह काम छोड़ दिया है।

जवान मसखरा : क्यों ?

बूढ़ा मसखरा : क्या क्यों-क्यों की रट लगाई। मसखरी तो अब बड़ी-बड़ी सभाओं और सदनों में होती है।

(झंडेबरदार का प्रवेश। मसखरे एक तरफ को छिपते हैं)

जवान मसखरा : राजा की जय हो। राजा का मंगल हो। न्यायप्रिय राजा का कल्याण हो।

बूढ़ा मसखरा : सारे विश्व का कल्याण हो। सब का मंगल हो।

जवान मसखरा : (बूढ़े मसखरे के पीछे-पीछे आते हुए) शहरों और गांवों का भला हो। बूढ़े और बच्चों का भला हो। सीधे-साधों का भला हो।

बूढ़ा मसखरा : लूले-लंगड़े का भी भला हो।

जवान मसखरा : गूंगे बहरे का भी भला हो।

बूढ़ा मसखरा : तेरा भी भला हो।

जवान मसखरा : मेरा भी भला हो।

झंडाबरदार : भई तुम लोग कौन हो ?

मसखरे : (आपस मे) अरे हां, हम लोग कौन हैं ? (एक ओर जाते हुये) अरे ! हम लोग कौन हैं—जनता (वापस आकर) हम जनता हैं ।

झंडाबरदार : जनता । मैं समझा कोई जासूस हो तुम लोग सी० आई० डी० के बन्दे !

बूढ़ा मसखरा : नहीं-नहीं हरगिज नहीं । हम नहीं आते हैं । डी० डी० टी० के चक्कर में ।

जवान मसखरा : हम तो बस शुद्ध और अबोध जनता हैं। मगर यह बताओ तुम कौन हो ?

झंडाबरदार : मैं राजा का झंडाबरदार था । सारी उमर मैंने राजा की झंडाबरदारी की "होशियार-खबरदार—महाराज पधार रहे हैं। खबरदार ! और अब मेरी तरक्की हुई है ।

जवान मसखरा : तरक्की (बूढ़े मसखरे को एक तरफ ले जाकर) दाल में काला ज़रूर है। (वापस आकर) कहो भइया अब क्या बना दिये गये हो ?

झंडबरदार : पहले था झंडाबरदार अब बना हूं जमादार ।

जवान मसखरा : सुना है तुमने यह जमादार बनाया गया है रे जमादार यह बताओ "घंटाओदार कौन बना है ।

बूढ़ा मसखरा : "गुणादार" कौन बना है ?

जवान मसखरा : "भागदार" कौन बना है ?

झंडबरदार : मुझे कुछ नहीं पता ?

बूढ़ा मसखरा : यहां ऐसा ही होता है। राजधानी में कोई कुछ का कुछ बन जाता है और यहां किसी को कुछ पता ही नहीं चलता ।

झंडाबरदार : पता ! अरे हां क्या आप मुझे बौने साहब का पता बता सकते हैं।

दोनो : यह कौन साहब है ?

झंडाबरदार : आप नहीं जानते हैं क्या ?

जवान मसखरा : पता होता तो आपसे क्यों पूछते ?

झंडाबरदार : उनको हमारे महाराज ने मन्त्री बनाया है ! और मुझे उनका जमादार।

बूढ़ा मसखरा : वह किस विभाग के मंत्री नियुक्त हुए हैं।

झंडाबरदार : बेकलमदान मंत्री ।

बूढ़ा मसखरा : यानि कि बिना किसी विभाग का मंत्री कहीं यह वही तो नहीं जो कभी चूहामार हाकिम कहलाता था।

झंडाबरदार : हां-हां वहीं है।

बूढ़ा मसखरा : तब तो भई जहां सुद्धु बिलाव और बुद्धु बिलाव होंगे वहीं बौने मियां भी होंगे। जहां बौने मियां होंगे वहीं सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव पाए जाएंगे···।

झंडाबरदार : वे मुझे कहां मिल सकते हैं ?

जवान मसखरा : सीधे जाओ। आगे चल कर बायीं और मुड़ो। दाहिनी और दुकानें हैं। उनसे आगे हो जाओ, तुम्हें एक चौराहा मिलेगा। उसको पार करो । दाहिनी ओर एक नलका है। उसके सामने एक लैटर बाक्स होगा। उसके पीछे मन्त्रियों का मुहल्ला है। वहीं ढूंढ लेना।

झडारबरदार : यानि सीधे ही जाना है।

मसखरा : नहीं नाक की सीध में जाइये । जमादार साहब, मंत्री बेकलमदान आपकी प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

(प्रस्थान)

जवात मसखरा : यह तो चला अब एक काम करें।

बूढ़ा मसखरा : क्या ?

जवान मसखरा : कोई गाना सुनाओ।

बढ़ा मसखरा : यह कौन सी बात है। पर तुम भी साथ दो।

जवान मसखरा : ज़रूर।

(दोनों-मसखरे रोफ नाच कर गाते हैं)

बौने प्यारे राजदुलारे, कुर्सी तेरी राह निहारे।
जन जन की आंखों के तारे, कुर्सी तेरी राह निहारे।
नाम से भागे चूहे सारे, कुर्सी तेरी राह निहारे।
तुझ में सारे गुण हैं, प्यारे तेरे लिये सजे चौबारे
कद के छोटे, अकल के न्यारे, कुर्सी तेरी राह निहारे।
मोटर कार में जब तू जाये और खिड़की पे बांह टिकाये
देख लोग, बने मतवारे कुर्सी तेरी राह निहारे।
दिन दिन इसकी शान बढ़ाना राजा को उंगली पे नचाना।
सब दफ्तर तू आप संवारे कुर्सी तेरी राह निहारे।
बड़े जतन से इसे बचाना सरल कहां है कुर्सी पाना
सबके मुंह ताले लगवा कुर्सी तेरी राह निहारे।
दुनिया तुझ पर तन मन वारे कुर्सी तेरी राह निहारे।
बौने प्यारे, राज दुलारे कुर्सी तेरी राह निहारे।

(दूसरी तरफ से सुद्धू बिलाव और
बुद्धू बिलाव का प्रवेश)

सुद्धू बिलाव : सुनो यार, अब तो दो ही रास्ते हैं, या बौने महाशय की खिलाफत करो या फिर उसके पैर पकड़ो।

बुद्धू बिलाव : अबे ! बौना अब मंत्री हो गया है। महाराज की नौकरी से तो हमें निकलवा दिया अब कहीं हमारा जीना भी हराम न करे।

सुद्धू बिलाव : खामोश ! कुछ दिनों तक बस चुप रहो ।

बुद्धू बिलाव : उसके बाद ?

सुद्धू बिलाव : मुअत्तिली के दिन तो दो-चार होते हैं। उसके बाद मुलाजिम फिर से बहाल होते हैं। मुअत्तली के दिनों को छुट्टी के दिन माना जायेगा या बिना वेतन का अवकाश, लेकिन नौकरी से नहीं निकाल सकते ।

बुद्धू बिलाव : अरे, उन्हें हम जैसे अनुभवी कर्मचारी कहां से मिल सकते हैं, हम जैसे कागज़ के कीड़े ।

सुद्धू बिलाव : ये तो सच है, मगर अब बौने महाशय के पैर पकड़ने पड़ेंगे ताकि वो हमारा पक्ष ले और हमारी नौकरी बहाल कराये ।

बुद्धू बिलाव : चलो शिष्टमंडल ले कर चलते हैं। राम कसम वो हमारा इन्तज़ार कर रहा होगा, बधाई देने भी नहीं गये हम । साला समझ रहा होगा कि हम रूठ गये हैं ।

सुद्धू बिलाव : सच कहते हो यार ! हमारे सिवा और कौन उसका मार्ग दर्शक हो सकता है, हम हर काम में माहिर, हम कागज़ के कीड़े ।

बुद्धू बिलाव : अरे, मन्त्री बनने से क्या होगा। कागज़ फाइलों की भी तो जानकारी होनी चाहिये ।

सुद्धू बिलाव : असल में ढोल बजाने वालों की भी ज़रूरत रहती है और ये रहे हम कागज़ के कीड़े ।

बुद्धू बिलाव : सच कहा, तो मिलाओ हाथ ।

दोनो : तेरी मेरी हुई यारी, लोगों की गई नींद मारी
चली आई प्रथा पाली,.........

: जो मर्जी कर सकते हैं हम, कोई न पूछे बात
कहीं न हो पूछताछ रे भैया, कहीं न हो पूछताछ ॥

सुद्धू बिलाव : चलो भाई जल्दी करो, देर हो रही है।

बुद्धू बिलाव : मौका सुनहरी है। जल्दी करो।

(दोनों चलने लगते हैं। सामने से बौना महाशय और झंडाबरदार का प्रवेश)

सुद्धू बिलाव : बधाई हो श्रीमान् बधाई हो।

बुद्धू बिलाव : सौ सौ बार बधाई। हज़ार बार बधाई।

सुद्धू बिलाव : हम श्रीमान् की ही उपस्थिति में आ रहे थे।

बुद्धू बिलाव : हज़ूर हमारी ओर से हज़ार मुबारिक।

पालने का पूत : अरे यह बधाई तो आप लोगों को है। मैं जानता था कि आप मेरे पास ज़रूर आयेंगे। कहिये कुछ कहना है ?

(दोनों मंच पर दण्डवत लेट जाते हैं और रोते-रोते कहते हैं)

दोनो : हुज़ूर ! आप सब जानते हैं—हमारी विनती है, हमें फिर से वहाल करें।

पालने का पूत : ऐसा जल्दी ही होगा। हो सकता है आज ही तुम्हें बहाल कर दिया जाए।

सुद्धू और बुद्धू : (खड़े होकर) आप का यश सब ओर फैले। श्रीमान् बौने का कल्याण हो।

सुद्धू बिलाव : हुज़ूर आज हमें दरबार में हाज़िर होना है।

पालने का पूत : तो डरते क्यों हो ?

बुद्धू बिलाव : हज़ूर हम वहां क्या कहेंगे। आपने ही हम पर दोष लगाया है और आप ही हमें छुड़वा सकते हैं।

पालने का पूत : आप दोनों वा इज्जत बरी हो जाओगे।

सुद्धू बिलाव : वाह खूब !

बुद्धू बिलाव : मगर कैसे ?

पालने का पूत : वहां सब सच कहना, सच के सिवा कुछ नहीं।

(तीनों एक तरफ होते हैं)

भूल गये तुम लोगों के साथ क्या हुआ। सबसे पहले छोटे मंत्री की पोल खोल दो।

बुद्धू बिलाव : यानी सब सच-सच कह दें। तो क्या आज ही सारी पोल खोल दें।

पालने का पूत : उसने तुम से रुपये लिये। नकद नोट तब जाके तुम्हें लोहे का परमिट मिला और तब लोहारों ने चूहेदानियां बनाईं।

सुद्धू बिलाव : हजूर सब याद है। आखिर सच ही तो है। कैसे भूल सकते हैं।

बुद्धू बिलाव : एक एक चूहेदानी बनाने में उसने अपना हिस्सा लिया।

सुद्धू बिलाव . उसने हम से दस लिये हों तो हम गिनेंगे सौ। मगर शर्त है आपको हमारा साथ देना पड़ेगा।

पालने का पूत : पूरा सहयोग।

सुद्धू बिलाव : फिर कैसे बच सकता है, बच्चू !

बुद्धू बिलाव : उसे इस्तीफा दिलवाना मेरा काम।

पालने का पूत : शाबाश हर कोई बात सोच समझ कर करना। उसके जाते ही समझ लो कि मेरे हाथ में सब आ जायेगा। रहा बड़ा मंत्री उसको यों खेल खिलाएंगे कि हाथ जोड़ के पैरों पर नाक रगड़े।

बुद्धू बिलाव : हम दोनों के होश बराबर हैं हजूर। क्यों भई बिल्ले।

सुद्धू बिलाव : हां भई बिल्ले।

दोनों : म्याऊं।

पालने का पूत : तो फिर चलें। महाराज प्रतीक्षा कर रहे होंगे।

दोनों : बौने महाशय की जय हो।

(प्रस्थान दूसरी ओर से मसखरों का प्रवेश)

बूढ़ा मसखरा : सुनो फिर बजने लगा है घण्टा।

जवान मसखरा : द्वार पै लटका हुआ न्याय का घण्टा।

बूढ़ा मसखरा : टन-टन-टन-टन (जंजीर खींचने का अभिनय करते हुये)

जवान मसखरा : देखो राजा की अटरिया।

बूढ़ा मसखरा : देखो जी दरबार।

दोनो : न्याय प्रिय राजा का दरबार
परदा उठा हुआ इज़हार
देखो किनके उड़ते हैं पुरज़े
जिनकी दाढ़ी में छिपे हैं तिनके (प्रस्थान)

(दूसरा परदा उठता है। राजा, मंत्री और बौना महाशय का प्रवेश)

राजा : मंत्रियो, उन, उन-उन दो कर्मचारियों को उपस्थित करो और कार्यवाही शुरू करो।

छोटा मंत्री : सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव दरबार में हाज़िर हो।

राजा : आप आज खुद ही क्यों आवाज़ लगा रहे हैं। झंडा बरदार कहां है।

बड़ा मंत्री : महाराज उसकी तरक्की हुई है। उसको हमने जमादार बनाया है।

राजा : क्या उसकी जगह अभी किसी को नहीं नियुक्त किया गया है। क्या यहां तक नौबत आई है कि हमारा झंडा नीचे गिरे और उसको उठाने वाला कोई न हो।

छोटा मंत्री : महाराज, जल्दी ही किसी की नियुक्ति होगी।

राजा : परन्तु देरी का कारण ?

छोटा मंत्री : महाराज ! अखबारों में इश्तिहार दिये जा चुके हैं। दैनिक समाचार-पत्रों में, साप्ताहिकों में, और लोकप्रिय पत्रिकाओं में भी दिये गये हैं। रेडियो से भी ऐलान करवा दिया गया, लेकिन आवेदन पत्रों की अंतिम तारीख अभी नहीं आई।

राजा : अजीब बात है। इस छोटी सी नौकरी के लिये भी इतना ढिंढोरा पीटना ज़रूरी था क्या ?

छोटा मंत्री : महाराज ! कानून की हर किसी को इज्जत करनी पड़ती है।

राजा : गलत ! इतने सारे पत्र पत्रिकाओं में इश्तिहार छपवाने का क्या उद्देश्य था। इस पर तो ढेर सारा रुपया बरबाद हुआ होगा। तुम्हें चाहिये कि किसी काबिल आदमी की तलाश कर उसकी नियुक्ति कर देते।

बूढ़ा मंत्री : महाराज ऐसे ही मौकों पर अखबार वालों को संरक्षण सरपरस्ती मिलती है। ताकि वह सरकार की सभी नीतियों का समर्थन करें।

राजा : वाह ! वाह ! यह संरक्षण है या घूस।

बड़ा मंत्री : महाराज इसके बिना तो गुजारा ही नहीं। जल्दी ही झंडाबरदार की जगह किसी को नियुक्त किया जायेगा।

राजा : ठीक है कार्यवाही चालू रखी जाये।

छोटा मंत्री : सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव दरबार में हाजिर हों।

सुद्धू और बुद्धू : महाराज आप के दो निलंबित कर्मचारी हाज़िर है।

सुद्धू : (रोते हुए) महाराज आज्ञा दें।

बुद्धू : महाराज हमारी ख़ता।

राजा : खता तुम्हें नहीं कुछ भी पता। तुम दोनों पर रिश्वतखोरी का इल्जाम है।

बड़ा मंत्री : तुम दोनों सरकारी कर्मचारी थे। चूहे मारने के लिये आपको श्रीमान् बौने महाशय के साथ तैनात किया गया था, लेकिन तुम दोनों ने लोगों को तंग किया और उनसे रुपये ऐंठे।

राजा : रिश्वत ! रिश्वत ! घूस !

बड़ा मंत्री : और इस तरह तुमने कानून का उल्लंघन किया। अपने पद का दुरुपयोग किया। तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है।

राजा : हां कहो, जल्दी कहो क्या कहना है। अपना जुर्म कबूल करो हम सजा सुनायेंगे और दरबार का समय भी नष्ट नहीं होगा।

छोटा मंत्री : तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना हो तो कहो।

सुद्धू बिलाव : महाराज पहले मैं कहूंगा।

बुद्धू बिलाव : नहीं महाराज, पहले मैं कहूंगा।

सुद्धू बिलाव : नहीं महाराज पहले मैं......

राजा : ठहरो ! यहां कोई और तो नहीं, सभी दरवाजे बन्द है या।

बड़ा मंत्री : महाराज पूरी तरह से।

राजा : बयान शुरू करो हम बड़े सब्र से सुन रहे हैं।

सुद्धू बिलाव : महाराज आज तक हमने मुंह बन्द रखा था और सच्चाई छिपाकर रखी थी।

बुद्धू बिलाव : छिपाकर महाराज छिपाकर, मुट्ठी में बन्द।

राजा : यानि रिश्वत, दोनों मुठ्ठियों में।

सुद्धू बिलाव : नहीं महाराज, ऊपर से नीचे तक सभी को सब कुछ बांट दिया।

राजा : मतलब !

बड़ा मंत्री : महाराज, यह दोनों कुछ इधर-उधर की बोल रहे हैं लगता है कहीं यह दूसरे ईमानदार कर्मचारियों पर दोष न मढ़ें ।

राजा : दूसरों पर दोष । अपराधी अपना बयान जारी रखें ।

सुद्धू बिलाव : महाराज ईमानदार कर्मचारी होने के कारण जब मैं उस चूहामार अभियान पर निकला तो लोगों ने मुझे जल्लाद कहना शुरू किया। चूहे पकड़ना कोई आसान काम नहीं था चूहे पकड़ने के लिये चूहैदानियों की जरूरत थी और चूहेदानियां बनवाने के लिये लोहे की ओर लोहे के लिये परमिट की जरूरत थी। आज्ञा और परमिट के लिए परमिट दफ्तर में बहुत सारे रुपये घूस के रूप में देने पड़े ।

राजा : वाह ! वाह ! सचमुच किस किस को ।

सुद्धू बिलाव : ऊपर से नीचे तक और नीचे से ऊपर तक सभी को ।

छोटा मंत्री : यह दूसरों पर निराधार दोष मढ़ रहा है । इसके लिए इसे सज़ा मिलनी चाहिए ।

राजा : ज़रूर मिलनी चाहिये मगर मुलज़िम अपना बयान जारी रखे ।

बड़ा मंत्री : महाराज, यह दरबार इसकी राम कहानी सुनने के लिए तैयार नहीं ।, यह हम सब का वक्त बरबाद कर रहा है ।

राजा : बयान जारी रखो, ऊपर से नीचे तक यानि किस किस को ।

सुद्धू बिलाव : ड्योढी से लेकर ऊपर वालों तक को । एक को, दूसरे को, निचले को ऊपर वाले को । कमरे से कमरे तक हर एक को (छोटे मन्त्री और बड़े मंत्री की ओर) इसे भी और उसे भी । (दोनों मंत्री सहसा खड़े हो जाते हैं) ।

बड़ा मंत्री : तुम जानते हो कि तुम क्या कह रहे हो। किस पर इलजाम लगा रहे हो। तुम्हें यह सारा साबित करना होगा।

राजा : ओ हो! बीच में बाधा मत डालो। शान्ति से काम लो बयान जारी रखो।

सुद्धू बिलाव : महाराज आखिर मैं चुप कब तक रहूं। वह जो आपका मंत्री है। इसने तब तक परमिट देने से इन्कार कर दिया जब तक कि इसको अपना भाग न मिला।

छोटा मंत्री : बदजबान! झूठा। कब! किसको! कैसा हिस्सा?

सुद्धू बिलाव : छोटे चूहे से! महाराज छोटा चूहा पाल रखा है। वह तब तक कागज़ों पर से गर्दन नहीं उठाता है। जब तक कि कागज़ों की मेज़ के नीचे से कागज़ी नोट न ले ले। महाराज यों तो अपने हाथ से कुछ नहीं लेते ताकि कसम खा सके कि कुछ नहीं लिया है। लेकिन उसके बाद तुरन्त काम हो जाता है। कागज़ों पर हस्ताक्षर कर देते हैं।

राजा : कागज़ी चूहा।

छोटा मंत्री : महाराज क्या हम दरबार में इन पागलों के गलत और झूठे इलजाम सुनने आये हैं यह मेरा घोर निरादर है।

राजा : सब्र से काम लिया जाये। बयान जारी रखो। अच्छा तो कागज़ी चूहा फिर उसके बाद।

सुद्धू बिलाव : फिर उसके बाद परमिट इश्शू हुआ। लोहे का तार ज्यादा से ज्यादा मात्रा में बाज़ारों में आने लगा। लौहारों ने चूहेदानियां बनानी शुरू कीं। लघु उद्योगों को पहली बार बढ़ावा मिला। सभी लोगों को चूहेदानियाँ दी गईं। चूहे पकड़े गये और हमारा काम आसान होता गया और आखिर धीरे-धीरे पूरा हुआ।

अब हम ने इस सब के लिये लोगों से रुपये वसूल किये, किराया वसूल किया तो कौन-सा पाप किया, महाराज ! उसमें से भी जो आधा पैसा बचा वह सब बौने महाशय के चुनाव पर खर्च हुआ। अब कहिये हमने कौन-सी चोरी की ?

राजा : मगर तुमने किस-किस को रिश्वत दी।

बुद्धू बिलाव : महाराज आप या तो दरबार में होते हैं या महल में रहते हैं। बाहर क्या कुछ होता है इसकी आपको कोई खबर नहीं। इन दोनों मंत्रियों ने आप के चारों ओर एक ऊँची दीवार खड़ी कर रखी है।

राजा : दीवार और हम नहीं खबरदार !

बुद्धू बिलाव : महाराज इनकी बनाई चारदीवारी में आप बन्द हैं। ये दोनों जो कुछ भी, सच या झूठ, आप को कहते हैं। उस पर आप विश्वास करते हैं।

राजा : अरे, वह तो मेरे हाथ पैर हैं।

सुद्धू बिलाव : मगर बेकार और बीमार।

बड़ा मन्त्री : यह हमारी बेइज्जती है। सरासर बेइज्जती। जो हमारी बर्दाश्त से बाहर है। इस दरबार में ये हमारी पगड़ी उछाल रहे हैं। और महाराज इसे बर्दाश्त कैसे कर रहे हैं। इनको इसी वक्त कैद किया जाना चाहिये।

राजा : कैद यानि जेल। यह जेल के चूहों से खेल खेलेंगे। हां बयान जारी रखो।

बुद्धू बिलाव : महाराज जब बाढ़ आई थी आप जानते हैं कि बांध के पास पानी के दरिया बह निकले, बांध टूट गया। इसका क्या कारण था।

राजा : कारण था बाढ़। पानी का बहाव।

बुद्धू बिलाव : यह सब तो कागज़ों में लिखे अनुसार था। जांच आयोग की रपट में दर्ज था। मगर सच्चाई कुछ ओर है।

राजा : क्या सच्चाई कुछ और है। जल्दी बोलो। क्या है सच्चाई।

छोटा मंत्री : महाराज यह मसला तो दफ्तर में नत्थी कर दिया गया है। इसका दरबार की इस कार्यवाही से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसके अलावा यह दोनों न जाने क्या ऊल-जलूल बक रहे हैं। जिसका न सिर है। न पैर।

राजा : असलियत क्या है। सच्चाई प्रकट हो रही है। सुनो सभी सुनो।

बुद्धू बिलाव : महाराज, इन दोनों मन्त्रियों ने एक दिन रात को मुझे बुलाया। बाढ़ आने से पहले। उन्होंने कहा कि तुम्हारी पदोन्नति होगी। अगर तुम साढ़े सात हज़ार चूहे पकड़ कर इस बांध के पास छोड़ आओ। महाराज हम चूहे पकड़ के लाये और उस बांध के पास उन्हें छोड़ दिया। चूहों ने बांध में बिल बनाये। हजारों बिल। बिना किसी संख्या के बिल। सारा बांध अन्दर से खोखला हो गया। और जब बाढ़ आई तो बांध सारा का सारा टूट गया। सारा शहर पानी में डूब गया। और ढेरों रुपया बांध की मरम्मत में खर्च हुआ। बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिये कोष स्थापित किया गया और इन दोनों मंत्रियों ने फायदा कमाया। अपना फायदा। रही मेरी तरक्की वह मुझे आज तक नहीं मिली।

राजा : अच्छा ऐसा भी होता है ?

बड़ा मंत्री : झूठ सरासर झूठ। ये बेबुनियाद इलज़ाम है। महाराज। हमारी ईमानदारी पर। आजीवन हमने जो आपकी सेवा की है, उस पर और हमारी योग्यता पर

लांछन लगाया जा रहा है। इनको कैद कर दिया जाये। ये हमारा चरित्र हनन कर रहे हैं।

राजा : खामोश ! खामोश---गुस्सा पी लो और बयान जारी रखो।

सुद्धू बिलाव : महाराज हमारा नाम तो यूं ही बिलाव पड़ा है। असली बिल्लियां तो आपके दाहिने और बायें ये दोनों ओर खड़ी हैं। हमने तो चूहे खत्म किये पर यह लोग तो पहले हमें फिर आपको और अन्त में सभी लोगों को खत्म करेंगे। क्यों भाई बिल्ले ?

बुद्धू बिलाव : हां भाई बिल्ले।

दोनो : म्याऊँ।

राजा : यानि ! साजिश। कौन करता है साजिश ?

बड़ा मंत्री : महाराज, इनका बयान असहनीय है। इनका बीच रास्ते पर सर धड़ से अलग कर दिया जाना चाहिये।

बुद्धू बिलाव : आप इनकी सम्पत्ति देख लीजिये। महाराज। इनके बंगले देखिये। विदेशी बैंकों में भी इनके नाम से रुपये भरे हैं।

सुद्धू बिलाव : यह सारा धन इन्होंने आपको एक चारदीवारी में कैद कर के कमाया है। आप इस दीवार से बाहर आइये और लोगों के कष्ट, दु:ख-दर्द स्वयं देखिये।

बुद्धू बिलाव : सभी खिड़कियाँ और दरवाजे खोल दीजिये। जो द्वार पर लटकने वाला घंटा है। यह तो बेकार की घंटी है। इस पर भी इन्होंने पहरेदार तैनात किये हैं। वे भी रिश्वत लेते हैं और तब जाकर घंटा बजाने देते हैं।

सुद्धू बिलाव : और रिश्वत न मिले तो इन दोनों को सूचित करते हैं। तब ऐसी मुरम्मत करवाते हैं कि दिन में ही तारे दिखाई पड़ते हैं।

बुद्धू बिलाव : महाराज बौने बाबू तक को भी इन्होंने नहीं छोड़ा। उससे भी रुपये ऐंठे और तब कहीं वह आप के दरबार में पहुँचा। नहीं तो क्या कोई ऐसे ही चुनाव थोड़े जीतता है।

सुद्धू बिलाव : महाराज यह दोनों रिश्वत की ज़ंजीर की दो मज़बूत कड़ियाँ हैं। यह आप को भी तोड़ कर रखेंगे।

बुद्धू बिलाव : यों तोड़ेंगे कि आप पगला जायेंगे। ये आपकी कुर्सी के पीछे पड़े हैं। और आपकी जान के भी।

छोटा मंत्री : खबरदार अब आगे कुछ न बोलना। यह दरबार तुम दोनों की निराधर और फिजूल बकवास सुनने के लिए तैयार नहीं है।

बड़ा मंत्री : महाराज, आप कैसे हमारी बेइज्जती बरदाश्त कर रहे हैं। हम इसी समय इस्तीफा देते हैं।

बड़ा मंत्री : ऐसे मंत्री बनने से तो भिखारी बनना अच्छा है।

राजा : इस्तीफा देना चाहते हो। या रूठ जाते हो हमसे। दोनों मंत्री इस्तीफा दे रहे हैं क्या ?

छोटा मंत्री : हां-हां-हां हम इस्तीफा दे रहे हैं।
(दोनों मंत्री गुस्से में प्रस्थान करते हैं)

राजा : हमें तुम्हारा इस्तीफा स्वीकार है। यों तो मंत्री इस्तीफा देने वालों में से नहीं होते।

पालने का पूत : महाराज इसी को कहते हैं अंगूर खट्टे हैं।

सुद्धु बिलाव : महाराज सच है। हमारी बातों में अगर सच्चाई न होती तो यह कभी भी इस तरह न भागते सच्चाई प्रकट हुई तो इनसे सहन नहीं हुई। महाराज सच्चाई कड़वी होती है।

राजा : सभी पत्रकारों और संवादाताओं को बुलाओ हम अभी प्रैस कांफ्रेंस में बोलना चाहते हैं।

पालने का पूत : जो आज्ञा महाराज। अभी सबको खबर की जायेगी।

राजा : हम नई नीतियों की घोषणा करेंगे। हम सारी व्यवस्था को बदल देंगे। नई व्यवस्था स्थापित करेंगे। सारी व्यवस्था को चूहे कुतर गये हैं।

पालने का पूत : महाराज उन चूहों को खत्म करना मेरे ज़िम्मे।

दोनों बिलाव : हम सब साथ रहेंगे। महाराज। तभी घर के चूहे बाहर के चूहे सभी खत्म होंगे।

राजा : सारी राज्य व्यवस्था को सुधारने की जरूरत है।

पालने का पूत : महाराज वह काम मैं करूंगा।

राजा : बूढ़े चूहों और काज़गी चूहों को हटा देना होगा।

पालने का पूत : महाराज उनकी जगह नवयुवकों को जो पढ़े-लिखे हों और ईमानदार हों नियुक्त किया जाना चाहिये।

राजा साजिशों और गुटबन्धी को निर्मूल किया जाये।

पालने का पूत : यह काम मैं करूंगा महाराज आप मुझमें विश्वास रखिये। में अकेला ही इसके लिये काफी हूं।

राजा : इस समय तुम सिर्फ प्रैस कांफ्रेंस का प्रबन्ध करो।

दोनों बिलाव : और हम ?

राजा : तुम दोनों ससम्मान बरी किये जाते हो। अभियोग से मुक्त। तुम्हारी नौकरी बहाल की जाती है। तरक्की बाद में दी जाएगी।

दोनो : महाराज की जय हो।

[सभी जाते हैं। केवल राजा इधर से उधर चक्कर लगाता है। फिर मुकुट कुर्सी पर रखता है चोगा भी उतार कर कुर्सी पर रखता है और दर्शकों को सम्बोधित करता है।]

राजा : मैं आप लोगों से कहता हूं। अजी आप से, आपसे और आप से। आप उनमें से हैं जो भ्रष्टाचार के साथ समझौता करते हैं। सम्पर्क रखते हैं। आप अपनी नींद से जगते नहीं हैं। पढ़े-लिखे होकर भी जन-समाज की सेवा नहीं करते। आप लोग छीना-झपटी में व्यस्त हैं। मन से आप बौने बाबू, सुद्धू बिलाव और बुद्धू बिलाव ही हैं। लेकिन समय आया है जब आप अपने गिरेबान में झांक कर देखें, अपने किये पर नज़र डालें।

[वापस आकर मुकुट पहन लेता है और अपने राजकीय वस्त्र धारण करता है]

राजा : दरबार ! प्रैस कांफ्रेंस। नये चुनाव होंगे।

[राजा कुर्सी पर खड़ा होकर कुछ कहने का अभिनय करता है। वह जोर-जोर से बोलता है पर आवाज नहीं निकलती। प्रकाश केवल उसी पर रहता है। दूसरी कुर्सियों पर बौना, बड़ा मंत्री, छोटा मंत्री और कुछ और नेता कुछ कहते दिखाई देते हैं।...... जैसे सभी अलग-अलग स्थानों पर भाषण दे रहे हों। यह सब मूक अभिनय में हो रहा है। एक-एक करके सब पर प्रकाश पड़ता है। फिर कई रंग की झंडियां लेकर कुछ लोग प्रवेश करते हैं। जैसे नारे लगा रहे हों। यह सब मंच पर कई खण्डों पर होता है।]

[मंचाग्र पर मसखरों का प्रवेश]

बूढ़ा मसखरा : हे सज्जनो !

हे लोगो !

क्या देख रहे हैं आप ?

क्या सोच रहे हैं आप ?

क्या ! कुछ समझे आप।

उठिये ! जाओ घर को आप।

जवान मसखरा : ठहरो, पहले मांगो दुआ खुदा से
हो सबका कल्याण ।

बूढ़ा मसखरा : आमीन ।

जवान मसखरा : चूहों के चक्कर में सबकी मुश्किल में है जान ।

बूढ़ा मसखरा : तो चलें ! बचाओ अपनी जान ।
जाते हैं हम इस ओर ।

जवान मसखरा : करना हमको याद पुनः तुम,
जाओ अब उस और ।

दोनो : खत्म हुआ तमाशा भई
जाओ तुम उस ओर
अजी घर को, जाओ तुम उस ओर ।
[पृष्ठभूमि में मूक अभिनय का दृश्य सारे मंच पर छाया हुआ है]

[इति]

त्रिनाम

लडीशाह : हे ! देख देख रे ! देख देख़ रे !
देख रे भैया !
स्वांग रचाने गांव से आये
हैया हैया ।
तू भी देख ले, मैं भी देखूं मेरे भैया
देसी रे देसी, और परदेसी भैया ।
ना है कोई मलकिन, ना कोई है धैया
हे ! हे ! हे ! है !!
देख रे भैया ।

(इधर-उधर ढूंढकर)

—अरे ओ कादिर भांडा ओ ।
हें ? इधर ही आ रहा है वह । मैं ऐसा करता हूं, इन दर्शकों के बीच छिप जाता हूं ।

(वैसा ही करता है)

कादिर : कहां गया यह लडीशाह !
लडीशाह कित गया ओह ?
छिपा कहां है रे···?
मुल्लाओं की कब्रों में या बीच खोह ?

लडीशाह : हे ! हे ! हे ! है !!
देख रे देखो !

कादिर : हैं ? किधर से भैया !

लडीशाह . दायें भैया !

कादिर : यहां कहीं भी, नहीं तू भैया।

लडीशाह : ऊपर भैया।

कादिर : यहां कहीं भी, नहीं तू भैया।

लडीशाह : नीचे भैया।

कादिर : जल्दी से कह दे रे अब तू कहां है भैया ?

लडीशाह : अरे इधर देख रे भैया।
हैया ! हैया !!
हैं शहर-गांव के दर्शक आये पहने अद्‌भुत रंग।

दोनों : मुफ्तखोर पर विना टिकट के, किया बहुत है तंग
किया बहुत है तंग रे भाई, किया बहुत है तंग।

लडीशाह : लाख टके की बात सुनाऊं, बात मेरी अनमोल
दर्शक है इक ऐसा आया, पहने ऐनक गोल।
और रखे रूमाल जेब में देखो कैसे आया
खुद है आया
अपनी मेम साथ में लाया
अपनी धाय, साथ में लाया
ढाई मास का बच्चा लाया
यहां देखने स्वांग हमारा, लाया है घरबार
पर है पक्का मुफ्तखोर, यहां मुफ्त में आया।

कादिर : हे बड़बोले, चुप रह। हमेशा से यही कहता आय़ा है कि—
ये···मुफ्त में आये हैं।

लडीशाह : हाय ! क्या बताऊं इन्होंने तो मुझे दुखी करके रख दिया है। जब सुनते हैं कि मैं स्वांग रचाने आ रहा हूं, बस टपक पड़ते हैं।

"अजी शाह साहिबो ! हम भी आ जाएं ?" हुजूर घरवालों को भी लेते आएं ? बच्चा भी लाएं ?" हुं ! पर जेब से कोई फूटी कौड़ी भी नहीं निकालता है। आज तक तो सारे स्वांग उधार पे रचाये हैं। ज़रा बताओ तुम्हीं, यह भी कोई तरीका है ? इस महंगाई के जमाने में तो कोई एक दाना चावल देने वाला नहीं। स्वांग वह भी उधार पर, कौन रचाये भला !

देख ! वो देख ! अभी हमारा खेल शुरू भी नहीं हुआ कि इनकी पटर-पटर शुरू हो गई। कोई आ रहा है तो कोई जा रहा ! ज़रा उसे तो देख वह अभी भी बैठने को जगह नहीं ढूंढ पा रहा है। वह, वह मूंगफली तोड़-तोड़ के गिरी निकाल रहा है। और यह, पशुओं की तरह हफ ! हफ ! करके सेब खा रहा है। मेरे भाई, मैं तो चला। मुझ से यह ना सहा जायेगा।

कादिर : कहां मेरे भाई ? मैं यहाँ अकेले थोड़ी रहूंगा।

लडीशाह : हाय ! तेरी यह यारी ही मझे रुकने को मजबूर करती है। पर, मैं जाऊं नहीं तो क्या करूं ! यह लोग तो जैसे बादामबाड़ी के सैलानी आये हैं। उनको देखो, कैसे तोड़-तोड़ के सिंघाड़े खा रहे हैं। ज़रा मुटल्ले को तो देखो।

कादिर : मुटल्ला ? कौन मुटल्ला ? कैसा ?

लडीशाह : नहीं समझा ना, मैं समझाता हूं। मुटल्ला यानी मोटू···वह होता है जिसका पेट बाहर लटका हो, इतना बाहर···

कादिर : कितना बाहर ?

लडीशाह : इतना बाहर कि उसमें पूरा हाथी घास का गट्ठर लिये समा जाये ।

कादिर : लगा अपनी ऊल-जलूल सुनाने । अरे ! सीधी-सादी आम जनता को ये बातें थोड़ी समझ आयेंगी ।

लडीशाह : तेरे भी ज़रा सा भेजा होता तो सारी बातें समझ जाता ।

कादिर : मेरे भेजा नहीं ? जबान संभाल कर बात कर। सरकार के दरबार में, इन दर्शकों पे व्यंग्य करते हुए तुम्हें शर्म भी नहीं आती ? यह तुम्हारा 'अकिनगांव' या 'वाहथोर' गांव नहीं है। यह शहर है शहर। कहते हो मुफ्त में आये हैं। बच्चे लिए आये हैं। आये हैं तो क्या हुआ, मेरा स्वांग देख के चले जायेंगे। तुम्हें काहे को खुजली हो रही है ?

लडीशाह : हूं ! बड़ा आया स्वांग रचाने वाला। अब यह दो टके का भांड मुझे सिखाने चला।

जीवन में अब मंच पे आया ।
स्वांग रचाने है लाया ।।

बदन तुम्हारा कांपे थर-थर
वंदे ! ना सच कहने से डर ।

कहो चाव से कौन है आया ?
टका खर्च कर टिकटें लाया ?

देख ले वह बाबू परदेसी ।
मूंगफली खा, पीता लस्सी ।

हम हैं लडीशाह खांदानी
खेलत गुजरी यह ज़िन्दगानी ।

कादिर : अबे ! रहने दे। मैं जानता हूं तू कितने पानी में है। पर यह तेरा गीत सुनने नहीं आये हैं। यह लोग 'पाथर' यानी स्वांग देखने यहां आये हैं।

लडीशाह : बता फिर ! किसका स्वांग तू रचने जा रहा है। राजा का स्वांग, किसान का स्वांग, या···

कादिर : यह सारे पुराने स्वांग हैं। समय बदला, हम बदले, पुराना पुरातन होता गया और नया निखरने लगा।

लडीशाह : तो बता, कौन-सा स्वांग रचेगा ?

कादिर : आज हमारा कोई नया स्वांग होगा।

लडीशाह : क्या नाम दिया है उसे ?

कादिर : नाम ! ···नाम···नाम, नाम दिया 'मुचलका साहब'।

लडीशाह : खुदाया ग़ज़ब ! 'मुचलका साहब' आज तक न सुना न देखा। ऐ कादिर भांड, यह तो बता वह 'मुचलका साहब' होता कैसा है ? **(पार्श्व में ढोल बजने की ध्वनि)**

कादिर : पहले ज़रा इधर तो आ, यह सूचना सुन लें।
(सूचना) होशियार ! खबरदार ! प्रत्येक ग्रामवासी को सूचित किया जाता है कि आज दिन में साहबे-खास मुचलका साब, इस गांव में पधारेंगे। इस कारण आप सभी गांव की मुख्य सड़क पे स्वागत के लिए आ जायें।

(ढम ! ढम ! ढम !!)

लडीशाह : या खुदा ! यह मुचलका साहब है क्या चीज़ ?

कादिर : चौकीदार से पूछा तो कहने लगा वह बड़ा साहिब है।

लडीशाह : बड़ा साहिब यानी गोवहरनल साहिब से भी बड़ा।

कादिर : गोवहरनल साहिब की तो कुर्सी बड़ी है। सुना है मुचलका साब की घवड़ी बड़ी है।

लडीशाह : या मालिक ! बड़ी घवड़ी। यह क्या बला है ?

कादिर : सुना है, घवड़ी चार टांग वाला जानवर होती है जो बड़ी तेज भागती है।

लडीशाह : मुखिया की बकरिया से भी तेज दौड़ती है क्या ?

कादिर : कहां घवड़ी--कहां बकरिया ।

लडीशाह : तो फिर मुनव्वर चाचा की बन्दूक से निकले छर्रे से भी तेज, आसमान में भागती होगी ।

कादिर : तुम शायद चरसियों के तकिये से सीधे यहां चले आ रहे हो ।

लडीशाह : ऐ भाई ! अगर यह फारसी मेरी समझ में न आए तो मुझे मार डालोगे क्या ?

कादिर : तुम्हीं बताओ, घवड़ी छर्रे की तरह कैसे भाग सकती है घवड़ी तो जमीन पर चलने वाला पशु है ।

लडीशाह : अरे सीधे क्यों नहीं बोल रहा घोड़ी है, घवड़ी कह रहा है । मैं समझा न जाने कौन सी बला होगी या अलीकोपट्टर ।

कादिर : अलीकोपट्टर नहीं भाई हैलीकोप्टर ।

लडीशाह : हां यार ! वही हु-ली-का-पट्टर । मगर यह तो बता यह 'मुचलका साब' है कौन ?

कादिर : अरे ! यह भी एक साहिब होते हैं !

लडीशाह : मैंने तो सिर्फ मुहल्लेदार साहब, तहसीलदार साहब, थानेदार साहब, डिप्टी साहब और चीफ साहब देखे हैं । यह मुचलका साहब कौन हैं ?

कादिर : अरे भाई ! आजकल साहबों की कमी थोड़े ही है । उनमें से यह भी एक साहब हैं ।

लडीशाह : स्वांग रचाने के लिए तुम्हें इसके सिवा कोई साहब नहीं मिला ।

कादिर : राजे-महाराजाओं ने हम पे जुल्म किया तो हमने खेला···

लडीशाह : दर्द स्वांग, दर्ज पाथर ।

कादिर : इस नये युग हमें कई अपनों ने भी परेशान किया । हम उनका स्वांग क्यों न रचें । पर आज जब हम इस जगह पर अपना तमाशा दिखाने आये, हमसे हंसने और खेलने के लिए टैक्स देने का मुचलका लिया गया । इसीलिए इस स्वांग का नाम 'मुचलका साब' है ।

लडीशाह : खुदाया ! इस गप्पी को देखो । कादिर गप्पी गप्प मार रहा है ।

कादिर : जब भी सच कहा, झूठा कहलाया ।

लडीशाह : स्वांग लिखने, खेलने के टैक्स के बीच, मुचलके का क्या सम्बन्ध, क्यों रे भांड ?

कादिर : ऊपर से नीचे तक पूरा सम्बन्ध । सुना रे लडीशाह दलिया के भांड !

लडीशाह : हूं ।

कादिर : रूठ गए क्या ?

लडीशाह : सीधी बात का उल्टे मुंह जवाब देते हो । मेरे क्या मुंह पे नाक नहीं है ?

कादिर : होती तो रोना ही क्या था । वह तो तुम मुंह धोते समय दरिया पे भूल आये ।

लडीशाह : हैं ! अभी तुम्हारा मुचलका साब आयेगा पानी में कूद के बाहर निकालेगा ।

कादिर : मतलब ! अभी हमसे कुट्टी है ।

लडीशाह : अच्छा भाई, कर ले पक्की ! एक और दो । पर यह तो बता तुम्हारा मुचलका साब कैसा है ? ज़ालिम तो नहीं है । अच्छा है ना ?

कादिर : हुई ना बात, अब सवाल तो पूछा। देखना उसे देखते ही सभी दर्शक अपने-अपने पेट पकड़ लेंगे, और वह जो पतलुंगी पहने हुए हैं अपनी-अपनी जेबों से रूमाल निकाल कर अपने मुंह में ठूसेंगे।

लडीशाह : बाप रे ! वह कैसे ?

कादिर : क्योंकि उसमें कमी है तो निचली मात्रा की। ऊपर की मात्राएं सींगों की तरह खड़ी हैं।

लडीशाह : समझा यानी बड़ा इन्साफ पसंद है, न्यायप्रिय है।

कादिर : लो सुन लो। अरे मेरे भोले लडीशाह। अब तो गांव में जहां कहीं भी मुर्गा हो तो सप्लाई करना होगा तब जा के छुटकारा मिल सकता है।

लडीशाह : तो यों कहो कि हम किस्मत के मारों की तकदीर अब भी वही है। बंधुआ मजदूरी के लिए भी हमीं हैं। रिश्वत भी हमें ही देनी है। मुर्गा सप्लाई करेंगे तो हम। अफसर आये तो सफर का खर्चा सरकार से लेगा, खिलाना-पिलाना होगा हमें।

कादिर : और क्या ? फिर भी जुलुम हम पर चालू।

लडीशाह : मगर यह मुचलका साहब अभी तक संवर रहा है क्या ? यह दर्शक हमारी बातें सुन-सुन कर तंग आ जायेंगे। सोचेंगे शायद दिखाने को कुछ है ही नहीं, इसीलिए बातों से मन बहला रहे हैं।

कादिर : अरे उधर तो देखो। देख ! कैसी सूरत बना के घोड़ी पर चढ़ के तैयार है।

लडीशाह : मगर इसके कपड़े तो अजीब से हैं। आधे किसान से आधे अर्दली से।

कादिर : ईद से लेकर अगली ईद तक एक ही जोड़ा जो पहनता है। पर आज मुचलका साहब बनने के लिए न जाने किस गांववासी से यह ड्राइवरी कोट उधार मांगा है।

लडीशाह : तब तो किस्मत का धनी है।

कादिर : उल्लू का पट्ठा। बदनाम करके ही छोड़ेगा। नहीं तो मेरे वस्त्रालय में वेश-भूषा की कमी थोड़े ही है।

लडीशाह : हां! हां! जब पहनना हो तो किसी से उधार मांगना पड़ता है।

कादिर : कितने ही मुकुट और ताज हैं।

लडीशाह : इसमें क्या शक है इसलिए तो सिर को सजाने के लिए गांव भर के मुर्गों के पर ढूंढने पड़ते हैं।

कादिर : कितनी ही तलवारें हैं।

लडीशाह : और कभी एक की जरूरत पड़े तो लोहार की मिन्नतें करनी पड़ती हैं।

कादिर : मालाओं की पिटारियां भरी हैं।

लडीशाह : और पहनने के लिए मटर के दाने पिरोने पडते हैं।

कादिर : घुंघरू तो बेशुमार हैं।

लडीशाह : और नर्तक को पहनाने के लिए तांगेवाले से घोड़ी के बड़े घुंघरू मांगने पड़ते हैं।

कादिर : रंग-बिरंगे कपड़ों के तो पूरे-पूरे थान हैं।

लडीशाह : तभी तो कनात लगाने के लिए बड़ी अम्मा का दुपट्टा चुरा के लाना पड़ता है।

कादिर : और भी कितनी ही चीजें हैं। दिखाने बैठा तो पूरी नुमाइश लग जायेगी।

लडीशाह : क्यों नहीं ! क्यों नहीं ! कोठारों के कोठार, कुठियों की कुठिया और झोंपड़ों के झोंपड़े भरे पड़े हैं।

कादिर : सारी चीजें दिखाने बैठा तो यह दर्शक कहेंगे, दिखावा कर रहा है।

लडीशाह : ले, फिर बुला मुचलका साहब को, स्वांग शुरू करते हैं।

कादिर : स्वांग रचायें रंग-बिरंगे दर्शक हों हैरान।
बातों-बातों से मन बहला काम बने आसान ।।

दोनों : काम बने आसान
हो ! हो !
काम बने आसान

लडीशाह : तो दूं मैं नारा ?

कादिर : झट से दो। तब तक मुचलका साहब भी पधारेंगे।

(दोनों मंच के चारों ओर घूमते हैं।)

लडीशाह : क्या है हमारा नारा ?

कादिर : स्वांग।

लडीशाह : क्या है सारी दुनिया ?

कादिर : स्वांग।

लडीशाह : हंसना और खेलना ?

कादिर : स्वांग।

लडीशाह : जीना और जिलाना ?

कादिर : स्वांग।

लडीशाह : सब कुछ पेट की खातिर—

कादिर : स्वांग ! **(प्रवेश किसान)**

किसान : स्वांग ! स्वांग !! बस, जैसे दुनिया में इसके सिवा है ही कुछ नहीं। कुछ खबर भी है कि दरिया के उस पार गांव में क्या आफत आन पड़ी है।

दोनों : क्या आफत ?

किसान : ऐसी आफत जिसे देख के सारा गांव कांप उठा हैं।

लडीशाह : हुंह ! जरा-सी हवा चली नहीं की गांव की नानी मरती हैं।

कादिर : कैसी आफत ! कोई नाम। कोई शकल। कुछ तो होगा ?

किसान : कहते हैं कोइ मुंडकटा साहब।

दोनों : हें ! (**दोनों पत्थर हो जाते हैं।**)

किसान : या खुदा ! इन दोनों को यह क्या हुआ ! यह दोनों तो पत्थर हो गये। न आवाज़, न कोई हिलता-डुलता। ऐ ! कादिर भाई, हुजूर ! अजी शाह साहब।

दोनों : उ-ऊ-ऊं—!

किसान : शुकर अल्लाह का। जल्दी होश आया। वरन् लेने के देने पड़ते।

दोनों : क्या आफत कही।

किसान : मुंडकटा साहब।

कादिर : पहनावा कैसा है ?

किसान : घास से बुनी लार-चूसनी गले में लटक रही है और घोड़ी पर बैठा है।

लडीशाह : मतलब, छोटा बच्चा जैसे लकड़ी का घोड़ा खींच रहा हो।

कादिर : गुस्सा आता है तुम लोगों की बातें सुनकर। बस वहां से कोई आया नहीं कि सारा गांव डर जाता है।

किसान : बेचारे वह भी क्या करें। बात ही ऐसी हुई। आप लोग वहां होते तो देख लेते।

लडीशाह : भई, यह तो बताओ। शक़ल-सूरत कैसी है ?

किसान : जब मैंने उसकी आंखों में आंखें डालकर देखा तो पाया कि अकल से उसके माथे पर दो जगह साजन उभरी है।

लडीशाह : अरे वाह रे रब्बा। अकिल के दो-दो साजन आहा !

किसान : साजन नहीं रे। सूजन, सूजन।

लडीशाह : एक ही बात है। एक गहरी एक उथली। दोनों एक सी दिखती हैं।

कादिर : अब बस तो करो। यह बताओ चालढाल कैसी है?

किसान : आंखें भूने हुए सिघाड़ों जैसी। होंठ पकौड़ों जैसे। जैसे, अभी-अभी कड़ाही से गर्म-गर्म निकले हों। सिर खरबूजे जैसा। सिर की टोपी परछत्ती की तरह बाहर को निकली हुई।

लडीशाह : भई कादिर भांडा रे! देखने लायक चीज़ है। चलो देख आयें।

किसान : अजी शाह साहब, रुकिए ज़रा। सुनिये फिर क्या हुआ।

लडीशाह : क्या हुआ? जल्दी बता।

किसान : जैसे ही मुंडकटा साहब पधारे, सभी किसान भाई गीत गाने लगे। उन्हें वह बेताज बादशाह लगा।

कादिर : गंवई या दूल्हा?

किसान : कुछ ऐसा ही।

लडीशाह : उनकी जेबों में इस्पंद और लौबान नहीं था? कांगड़ियों में आग नहीं थी? स्वागत नहीं किया उसका?

किसान : अजी कहां! खबर पाते ही उनके होश उड़ गए, सभी भाग गए।

कादिर : खामोश! उधर सारा आकाश धूल से घिरने लगा है।

किसान : आप सुनिये तो···जैसे ही मुंडकटा साहब घोड़ी से उतरा, लोगों की असंख्य भीड़ ने उन्हें घेर लिया। घोड़ी बेकाबू हो के आसमान से बातें करने लगी। वह इतनी तेज़ भागी ·· भागी···

लडीशाह : कितनी तेज ?

किसान : इतनी तेज कि देखते ही गायब हो गई। मुंडकटा साहब बेहोश हो गये।

कादिर : गांव पे आ गई नयी मुसीबत।

किसान : इधर से उधर उसको लुढ़काया। पानी के मटके भर-भर के उंडेल दिये पर वह माई का लाल बेहोश ही पड़ा रहा।

कादिर : अफसोस फिर तो पुलिस आई होगी।

किसान : फिर उसके सीने पे घास की गठरी जलाई गई और नाक में धुआं सुंघाया गया।

कादिर : यह कुछ अकल से काम लिया, फिर ?

किसान : मुंडकटा साहब को होश आया तो अपनी घोड़ी ढूंढने लगा।

लडीशाह : मगर घोड़ी तो लापता थी ?

किसान : जी हां, बेबस होके गाने लगा वह।

दोनों : सच ! कैसे गाया ?

किसान : ऐसे—(गाता है)
घोड़ी गंवाई।

दोनों : अभी-अभी रे।

किसान : थी घास खिलाई।

सभी : अभी-अभी रे।

किसान : कहां ढूढूं छोरी ?

सभी : घोड़ी री घोड़ी।

किसान : लौटो जल्दी।

सभी : जल्दी री जल्दी।

लड़ीशाह : बिचारा दिल खोल के रोया है पर पशु तो पशु ही है, वह क्या समझे !

किसान : हुजूर ऐसा न कहो। मैं वहां न होता तो न जाने क्या होता।

कादिर : शाह साहबा ! लगता है बड़ी बहादुरी दिखाई है इसने।

किसान : मैंने एकदम मुंडकटा साहब की ओर देखा और कहा, "ऐ मेरे राजाओं के राजा, दिल की गहराइयों से रो-रो कर, इन सिंघाड़ों-सी आंखों से दो आंसू बहाकर उसे पुकार। तब देख ऊपर वाला क्या कमाल करता है। और, जैसे ही रोते हुए उसने उसे पुकारा, घोड़ी आ पहुंची। कोई बच्चा उसकी पूंछ पकड़कर उसे घसीट रहा था। मुंडकटा साहब ने घोड़ी को गले से लगाया, फिर कहा 'घोड़ी अपनी चाल दिखाना।' उसका इतना कहना था कि घोड़ी हवा से भी तेज भागने लगी। लोगों में भगदड़ मच गई। सभी भागने लगे। धूल आसमान तक उड़ने लगी। देखो, उस तरफ कितनी धूल है। सारा गांव धूल से ढकने लगा है।

लड़ीशाह : तो साहब खुद कहां गये ?

किसान : उसे कौन देखता। भागते-भागते मैं यहां आया सिर छिपाने।

कादिर : बाकी लोग कहा गये ?

किसान : कुछ तो पहाड़ी की तरफ और कुछ खेतों की तरफ। केवल कुछ ही लोग वहीं आस-पास छिपे रहे।

(फर्जी लंगड़ा लंगड़ाते हुए आता है।)

लंगड़ा : अरे क्यों हमारी बदनामी करता फिर रहा है ? न जाने क्या झूठ-मूठ इन इज्जतदार आदमियों को बताया है।

किसान : नहीं जी नहीं। एक भी शब्द झूठ नहीं कहा। जो कुछ देखा वही बताया। पर यह तो बताओ तुम ऐसे क्यों चल रहे हो। दाहिना पैर पूरा जमीन पर क्यों नहीं टिकाते हो ?

लंगड़ा : क्या बताऊं ! आज रात को देखा ख्वाब में, कि मेरे बायें पैर में छः इंच लम्बी कील चुभ गई है, बस तभी से यह दाहिना पैर ठीक से टिका नहीं पा रहा हूं।

किसान : भैया हम सब गंवार हैं। जूते पहन के नहीं सोते। ऐसा करते तो ख्वाब में न कीलें चुभतीं, न बबूल के कांटे।

लडीशाह : ओ बबूल के बच्चे, चुप हो जा। इस फर्जी लंगड़े को नहीं जानते, यह झूठ-मूठ का लंगड़ा बना फिरता है। सात नदियां तुम्हें घुमाके प्यासा लौटा लायेगा। यह गंवार बातें क्या कर रहा है—हो तो फर्जी भाई तुम रूखे-रूखे क्यों हो ?

लंगड़ा : (लंगड़ाई छोड़ के) क्या बताऊं सुबह से चैन खोया है।

कादिर : भला क्यों ?

लंगड़ा : जब से दरिया के उस पार वह नये साहब आये हैं। क्या नाम था—-

किसान : मुंडकटा साब।

लंगड़ा : तू चुप हो जा। हां, मुंहछिला साब आये हैं। उसने सारा गांव परेशान कर रखा है।

लडीशाह : वह कौन साहब हैं ?

लंगड़ा : क्या पता कोई उल्टी खोपड़ी मालूम होती है। बोलता आधी कश्मीरी, आधी पंजाबी है।

लडीशाह : यानी, निशाचर।

कादिर : गलत, मिकसचर यानी मिलावट।

लडीशाह : चढ़ने को घोड़ी है ?

किसान : भूरी घोड़ी।

लंगड़ा : नहीं हरी घोड़ी।

कादिर : या हवाई घोड़ी।

लंगड़ा : उसके तो मैंने कितने ही रंग बदलते देखे। कभी सफेद तो कभी छींट वाली।

लडीशाह : ऊपर वाले की देन है भई। चलें ज़रा हम भी देख के आयें।

लंगड़ा : कहां शाह साहिब । वहां तो मुंहछिला साहब ने आना-जाना और गुजरना बन्द किया है ।

कादिर : क्या मतलब ?

लंगड़ा : मतलब यह कि जब मुंहछिला साहब ने घोड़ी को हुक्म दिया "घोड़ी अपनी चाल दिखा" उसने दुलत्ती मारनी शुरू की । लोग डर के मारे भागे । घोड़ी की उछलकूद से सारी धूल आकाश में उड़ी । चौकीदार ने पूछा, 'यह कैसी घोड़ी है' वह बोले, 'सर्कसी घोड़ी' ।

लडीशाह : सरकशी घोड़ी । यह किसी खास जगह की होगी ।

लंगड़ा : नहीं ! सर्कसी घोड़ी वह होती है जो सर्कस से ट्रेनिंग ले के आई हो ।

कादिर : ज़रा यह बताओ क्या इस ट्रेनिंग के लिए भी सरकार से लोन मिलता है ।

लंगड़ा : यह तो मैं पूछना ही भूल गया । अगर ऐसी ट्रेनिंग के लिए लोन मिल रहा होता तो हम भी गांव के सब मुस्टंडे भेज देते ।

लडीशाह : और जब वह वापिस आते तो वह भी गांव की सारी धूल आसमान तक उड़ा देते ।

किसान : ऐसी कोई स्कीम होती तब ना ।

कादिर : ऐ झूठ-मूठ के लंगड़े मियां । पहले यह तो बताओ, उस ट्रेनिंग वाली घोड़ी ने क्या किया ?

लंगड़ा : जब चारों तरफ धूल ही धूल बिखरने लगी तो उसी धूल में वह घोड़ी लापता हो गई । न जाने कहां छिप गई । मुंहछिला साब चकरा गया । उसके पसीने छूटने लगे और वह दहाड़ें मारकर रोया ।

कादिर : वहां उसे चुप कराने को कोई नहीं था क्या ?

लंगड़ा : मैं पास में छिपकर यह सब देख रहा था। तभी पास के गांव से सभी लोग आये और पूछने लगे कि वह क्यों रो रहा है।

लडीशाह : उसने क्या जवाब दिया ?

लंगड़ा : वह गाने लगा।

सभी : कैसे गाया ?

लंगड़ा : ऐसे—
घोड़ी की हैं टांगें तीन, तीनों हैं बेकार।

बाकी : पैर बेशुमार, हो हो पैर बेशुमार।

लंगड़ा : घोड़ी मेरी ताकतवर, फूला पेट पतली कमर।

सभी : रूठे वह हर बार, हो-हो, रूठे वह हर बार।

लंगड़ा : मुचलका ले के आता होश, घोड़ी रहती है खामोश।

सभी : छींकें बेशुमार, हो-हो छींकें बेशुमार।

लडीशाह : बड़े प्यार से दिल का हाल सुनाया है उसने। जिस अफसर के दिल में जानवरों के लिए इतना प्यार है उसके दिल में इंसानों के लिए कितना होगा ?

काबिर : मटके भर के। मगर साथ ही लगाम भी इतनी सख्त होगी कि कहीं कोई प्यार ले के ही न भागे।

किसान : फिर मुंडकटा साब को घोड़ी मिली क्या ?

लंगड़ा : कहां ? मैं अपनी छिपी जगह से बाहर आया और उससे कहा 'ऐ पादशाहों के पादशाह ! लोगों की तरफ पीठ करके खड़े हो जाओ। दोनों हाथ आसमान की तरफ उठाओ और देखो आपका साया इतनी दूर तक जायेगा कि घोड़ी को पकड़ लेगा और घोड़ी अपने आप वापस आयेगी।

लडीशाह : उसने तुम्हारी बात मान ली ?

लंगड़ा : और नहीं तो क्या करता। उसने दोनों हाथ ऊपर की तरफ उठाए और खड़ा हो गया। घोड़ी पीछे से आई और मुंहछिला साब को धकेल दिया। मुंहछिला गिरने लगा मगर उसने एकदम से घोड़ी की पूंछ पकड़ ली।

कादिर : गलती माफ ! घोड़ी उसको घसीट के तो नहीं ले गई।

लंगड़ा : पूरी तरह से नहीं। हां ! पांच-सात कदम तो उसे घिसटना ही पड़ा। घुटनों के बल।

लडीशाह : यानी छोटा छोकरा जैसे चलाये काठ का घोड़ा।

किसान : नहीं जी ! बड़ा बछड़ा।

कादिर : छोड़ो पुरानी बातें। फिर क्या हुआ ?

लंगड़ा : धीरे-धीरे लगाम पकड़ी और घोड़ी को काबू में किया। घोड़ी पे सवार हो के कहने लगा, ''ऐ मेरे गांव के साथियो ! अब हम करने चले गर्दिशे गांव''। और यह कहकर इसी तरफ निकला।

लडीशाह : या अल्लाह ! यहां तो न आयेगा।

कादिर : यहां आये तो हम क्या कहें उससे; क्या मांगें उससे ?

किसान : इंसाफ !

लडीशाह : कैसे ?

किसान : ऐसे—
मांगो रे मांगो

बाकी : मांगो रे इंसाफ !

किसान : मांगो रे मांगो।

सभी : मांगो रे इंसाफ।

किसान : सींगों से हैं उसके सिर पे टाप।

सभी : मांगों रे इंसाफ।

किसान : टूटे उसके खुर के दोनों टाप।

सभी : मांगो रे इंसाफ।

किसान : टेढ़े उसके अंग अनाप-शनाप।

सभी : मांगो रे इंसाफ।

किसान : मांगो रे मांगो, हां माई-बाप।

सभी : मांगो रे इंसाफ।

लडीशाह : सुनो भई। घोड़ी के घुंघरुओं की आवाज़ कहीं से सुनाई दे रही है।

कादिर : कहीं आ तो नहीं गया?

किसान : ज़रा देखो तो।

लडीशाह : आया! आया!!

कादिर : आया, मुचलका साहब आया।

किसान : घास की बुनी लार चूसनी गले में लटक रही है। मुंडकटा साहब आया।

लडीशाह : आया। वर्दी पहने है। आधा अर्दली जैसा और आधा ड्राइवर जैसा बना है। आया! आया!!

लंगड़ा : घोड़ी चढ़ के मुंहछिला साहब आया।

सभी : आया! आया!! **(हाथ मिलाते हुए)**
त्रिनाम आया। **(सब एक ओर मुंह मोड़कर)**

कादिर : सब साथ मिल के—

सभी : बोलो।

कादिर : मेहरबान खुदाया!

सभी : हो लो।

कादिर : तुम सब को दो-दो टाटा मर्सडीज़ ट्रक, तीन-तीन रूट परमिट, और मेरे लिए···।

सभी : एक लारी का रस्ता खोलो।
(सभी का प्रस्थान) ☐

कश्मीरी नाटक को समकालीन जीवन की वास्तविकता से जोड़कर उसे नये और सार्थक शिल्प प्रयोगों में प्रस्तुत करने में मोतीलाल क्यमू (जन्म 1933) विशेष रूप से सफल रहे हैं। क्यमू आधुनिक एब्सर्ड नाटक तथा कश्मीरी लोक-नाट्य रूप "भांड पाथ़र" के रंग तत्त्वों के अनोखे समन्वय द्वारा अपने आस-पास के जीवन की बेहूदगियों को नाटक में पकड़कर अपनी रचना-शीलता का एक प्रभावशाली आयाम उद्घाटित करते हैं। वस्तुतः कश्मीरी रंगमंच को अपने विशिष्ट रंग प्रयोगों द्वारा गति देने में क्यमू की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रही है। आधुनिक पश्चिमी नाटक और समकालीन भारतीय लोक तथा साहित्यिक नाटक से भी वे बखूबी परिचित हैं और अपने शिल्प में आवश्यकतानुसार उनके तत्त्वों को विन्यस्त करते हैं।

इस संकलन का सबसे सशक्त नाटक है 'मंज़ल्य निक्' अथवा 'पालने का पूत' जो हमारे राजनीतिक परिवेश की बेहयाइयों को निर्ममता से छीलकर रख देता है। नारे उछालकर लोगों को बहकावे में रखने और अपने स्वार्थ की पूर्ति करने वाले राजनीतिज्ञों के हथकण्डों पर नाटक में ज़बरदस्त चोट की गई हैं। एक निकम्मा और निठल्ला बौना (पालने का पूत) हमारी राजनीति का सही रूप जानकर इन सभी हथकण्डों को आजमा कर लोगों को आतंकित करके वोट द्वारा सत्ता हथियाने की होड़ में कैसे आगे बढ़ने में सफल होता है—इस विडम्बना को प्रस्तुत कर नाटककार नारों को ओढ़ने वाले चेहरे की विरूप सच्चाई को निरूपित करता है। 'पालने का पूत' में नाटककार हमें चारों ओर से व्याप्त भ्रष्टाचार, लूट-खसोट, धूर्तता के मूल स्रोतों की बहुत करीब से पहचान कराता है।

—शशि शेखर तोषखानी